भगवान आए हैं,
अल्लाह आए हैं,
God आए हैं

बी.के. सुभाष

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © BK Subhash 2026
SLM Global Nursing College
Talhati, Abu Road (near Shantivan)
DIST. SHIROHI, Rajasthan
CONT. NO. 8794159152
Email address : subhashchandrakarmakar1936@gmail.com

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-802-2

First Edition: July 2026

प्रोजेक्ट : बाबा की प्रत्यक्षता

भगवान आये हैं ,अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

बी.के. सुभाष, अंग्रेज़ी भाषा-साहित्य में स्नातकोत्तर, एक प्रतिभाशाली, प्रभावशाली एवं ओजस्वी वक्ता, वर्ष 2000 में प्रथम बार Brahma Kumaris के संपर्क में आए। उस प्रथम मिलन ने ही उनके अंतर्मन को गहरे आनंद से भर दिया, और वे तुरंत ही राजयोग की पढ़ाई में पूर्णतः निमग्न हो गए।

ज्ञान, योग, धारणा और सेवा–इन चारों विषयों में गहराई से उतरते हुए उन्होंने अनुभव किया कि इसे "सहज राजयोग" क्यों कहा जाता है।

1) **ज्ञान अर्थात् परमपिता परमात्मा (बाबा) का सत्य और यथार्थ परिचय।**
2) **योग अर्थात् प्रेम, स्मृति और जागरूकता के साथ बाबा जो हैं, जैसा हैं, यथार्थ पहचान के साथ उसे याद करना।**
3) **धारणा अर्थात् दिव्य गुणों को जीवन में धारण कर, स्वयं को बाबा के समान बनाना।**
4) **सेवा अर्थात् प्रत्येक आत्मा को बाबा का परिचय देना और उन्हें आत्मिक जागृति की ओर प्रेरित करना।**

इस प्रकार, राजयोग उन्हें किसी कर्मकाण्ड या बोझिल साधना के रूप में नहीं, बल्कि एक अत्यंत सरल, श्रेष्ठ, सहज और जीवन-परिवर्तनकारी आध्यात्मिक मार्ग के रूप में अनुभव हुआ।

वर्ष 2000 से 2020 तक की अपनी बीस वर्षीय आध्यात्मिक यात्रा में बी.के. सुभाष ने यह देखा कि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में लगभग अस्सी प्रतिशत विद्यार्थी अशिक्षित महिलाएँ हैं, जबकि अनेक अन्य केवल आंशिक रूप से शिक्षित हैं। वास्तविक अर्थों में गहन चिंतनशील और बौद्धिक साधक यहाँ बहुत कम दिखाई देते हैं, और जो हैं भी, उनमें से अनेक इस ज्ञान की गहराई को पूर्णतः समझ नहीं पाए हैं।

कुछ लोगों ने इन अत्यंत सरल शिक्षाओं को अनावश्यक रूप से बौद्धिक जटिलता में उलझा दिया, जिससे भोले, निष्कपट और सत्य के जिज्ञासु साधकों के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया।

इसी कारण उन्होंने मुरलियों का गहन अध्ययन किया और पाया कि बाबा का ज्ञान वास्तव में अत्यंत सहज, सरल और सीधा है।

इस अनुभूति के आधार पर उन्होंने ईश्वर की प्रत्यक्षता और आत्मिक जागरण को समर्पित अनेक पुस्तकें तथा नाटक लिखे। वर्ष 2020 के कोविड लॉकडाउन के दौरान उन्होंने "प्रोजेक्ट: बाबा की प्रत्यक्षता" (परमपिता परमात्मा की प्रत्यक्षता) नामक एक लघु पुस्तिका भी तैयार की।

बी.के. सुभाष : अपनी प्रथम विनम्र साहित्यिक प्रस्तुति –

"भगवान आए हैं, अल्लाह आए हैं,God आए हैं"–

को सामान्य पाठक समाज तथा विशेष रूप से राजयोग के जिज्ञासुओं के समक्ष अत्यंत विनम्रता के साथ समर्पित करना चाहते हैं।

इस कृति को BK Rammi (श्रीलंका) तथा BK Sapna (चीन) जैसी दो बी.के. बहनों द्वारा विशेष सराहना प्राप्त हुई, जिसने लेखक के उत्साह और संकल्प को और भी दृढ़ बना दिया।(Cover page के विपरीत page के लिए।)

*****

Contents

प्रोजेक्ट : बाबा की प्रत्यक्षता....... iii
Inspiration....... vi
प्रेरणा....... vii
Inspiration....... viii
प्रेरणा....... ix
प्रस्तावना....... xi
प्रथम अध्याय: एक अद्‍भुत आध्यात्मिक महा-नाटक....... 1
द्वितीय अध्याय: भगवान बाप का सत्य और यथार्थ परिचय....... 23
तृतीय अध्याय: बाबा की श्रीमत अनुसार योग के लिए यथार्थ चिंतन....... 46
चतुर्थ अध्याय: उपसंहार आने वाली दुनिया कैसी होगी : स्वर्ग का नक्शा... 60

Inspiration

From: B.K. Ramml Sri Lanka
Gyan Mansarovar Panipat, India
20.06.2020

To

B.K. Subhash Bhai. Assam, India.

Dear Divine Brother, B.K. Subhash Bhai,

I greatly appreciate your pure love, concern and talent in revealing our dearest Supreme Father to all souls of the world. Your talented approach will touch the hearts of each and every one with pure good wishes.

Wish you all success in Baba's seva.

B.K. Rammi, Sri Lanka.

प्रेरणा

प्रेषक : बी.के. रम्मी, श्रीलंका

Gyan Mansarovar, भारत

दिनांक : 20.06.2020

प्रति :

बी.के. सुभाष भाई

असम, भारत

प्रिय दिव्य भ्राता, बी.के. सुभाष भाई,

संपूर्ण विश्व की आत्माओं के समक्ष हमारे अति प्रिय परमपिता परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के लिए आपका पवित्र प्रेम, गहन लगन तथा विलक्षण प्रतिभा वास्तव में अत्यंत सराहनीय है।

आपके प्रतिभाशाली और हृदयस्पर्शी प्रयास प्रत्येक हृदय को शुभभावनाओं और पवित्र संकल्पों से स्पंदित कर देंगे। आपकी यह दिव्य सेवा निश्चय ही अनेक आत्माओं के जीवन में आशा, प्रकाश और आध्यात्मिक जागृति का माध्यम बनेगी।

बाबा की सेवा में आपको निरंतर सफलता प्राप्त हो—इसी शुभकामना के साथ।

स्नेह और शुभाशिष सहित,

बी.के. रम्मी

श्रीलंका

Inspiration

Gyan Mansarovar Panipat, India,
31st August, 2020

Dear Divine Brother, Subhash Bhai,

Om shanti. **I'm really touched to see your dedication and deep churning. You really have the concern and pure heart along with deep study of Baba's knowledge and understanding of Baba's Shrimat, and therefore Baba is touching your intellect with so many deep points of knowledge.**

I believe that the pure vibrations of your selfless and intoxicated efforts to reveal and glorify Baba itself is a great service. I wish you all the best in your pure mission.

Your spiritual sister,

BK. Sapna, China

प्रेरणा

प्रेषक : बी.के. सपना, चीन
Gyan Mansarovar, भारत
दिनांक : 31 अगस्त, 2020

प्रिय दिव्य भ्राता

बी.के. सुभाष भाई,

ओम् शान्ति। आपकी समर्पणता और ज्ञान की गहरी मंथन मेरी दिल को छु गई हैं। बाबा के लिए आपकी सच्ची दिल और बाबा को प्रत्यक्ष करने की आपकी सही तमन्ना है।इसके उपरांत बाबा के ज्ञान को आप बहुत गहराईं से अध्ययन करते हैं और बाबा की श्रीमत को आप सही रीति समझते हैं। इसलिए बाबा भी स्वयं आपकी बुद्धि को ज्ञान के अनेक गूढ़ और दिव्य बिंदुओं से स्पर्श कर रहे हैं।

मैं समझता हूं बाबा को विश्व में प्रत्यक्ष करके महिमा पंडित करने की आपकी खूबी, निस्वार्थ प्रयास और पुरुषार्थ के जो प्रक्रम्पन है वही बहुत बड़ी सेवा है। आपके इस मिशन में मेरी शुभभावना और शुभकामनाएं रहेगी।

आपकी दैवी बहन,

बी.के. सपना, चीन

*****

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, God आए हैं

प्रस्तावना

"प्रस्तावना के आरम्भ में ही मैं, इस कृति का विनम्र लेखक, हिन्दी भाषा के समस्त आदरणीय पाठक एवं पाठिकाओं के श्रीचरणों में सादर नमन करते हुए अपना निवेदन अर्पित करता हूँ। यदि इस पुस्तक में कहीं भी भाषा-संबंधी त्रुटियाँ अनजाने में रह गई हों, तो उनके लिए मैं हृदय की गहराइयों से क्षमा याचना करता हूँ। हिन्दी में यह मेरा प्रथम प्रयास है; अतः आप सभी की सहृदयता, उदारता एवं स्नेहपूर्ण दृष्टि की अपेक्षा रखता हूँ, जिससे यह लघु प्रयास भी आपके आशीर्वाद से सार्थक हो सके।"

संत कबीरदास ने एक अत्यंत गूढ़ सत्य को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

"दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।

जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय॥"

अर्थात् मनुष्य प्रायः दुःख के समय ही परमात्मा को स्मरण करता है, परंतु जो सुख के समय भी प्रभु का स्मरण करता है, उसके जीवन में दुःख का स्थान नहीं रहता।

सतयुग में ऐसे ही दिव्य और पवित्र जीवन का अनुभव होता था। उस समय किसी को भी ईश्वर को याद करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि ही दिव्यता और शांति से परिपूर्ण थी। भारतवर्ष में एक ही धर्म, एक ही जाति, एक ही राज्य और एकता का अद्‌भुत साम्राज्य था। सभी मनुष्य सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण,सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्मवाले थे।

उस युग में मानव जीवन पूर्णतः अहिंसा, प्रेम और पवित्रता पर आधारित था। सभी सूर्यवंशी देवी-देवताओं के समान गुणों से युक्त थे और प्रकृति भी सतोप्रधान अवस्था में विद्यमान थी। मनुष्यों की आयु अत्यंत दीर्घ होती थी – 150 वर्ष – और जीवन पूर्ण सुख, शांति तथा समृद्धि से परिपूर्ण था।

उसी काल को वास्तविक स्वर्ग कहा जाता है। इसे ही वैकुण्ठ, विष्णुलोक, देवलोक, शिवालय, दिव्यधाम, जन्नत, बहिश्त, Heaven तथा Paradise आदि अनेक नामों से जाना जाता है।

त्रेतायुग में दो कलाओं के क्षीण होने से मनुष्य की पूर्णता घटकर चौदह कलाओं तक सीमित रह गई, और इसी काल में चन्द्रवंशी क्षत्रियों का उदय हुआ। उस समय मनुष्य और प्रकृति दोनों ही सतोगुणी थे, इसलिए जीवन में संतुलन, शांति और सादगी का वास था। लेकिन, मनुष्य की आयु घटकर लगभग सौ वर्ष रह गई, परंतु जीवन में संतोष और सुख की कोई कमी नहीं थी।

सत्ययुग और त्रेतायुग में भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। चारों ओर समृद्धि, शांति और आनंद का वातावरण था। दुःख का नामोनिशान तक नहीं था। मनुष्य इतना संतुष्ट और पूर्ण था कि उसे ईश्वर को पुकारने या विशेष रूप से स्मरण करने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं होती थी।

द्वापरयुग में धीरे-धीरे परिस्थितियाँ परिवर्तित होने लगीं। मनुष्यों के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे पाँच विकार प्रवेश करने लगे। इन विकारों के प्रभाव से मनुष्य के जीवन में अशांति और दुःख का विस्तार हुआ। इसी कारण उसने ईश्वर की ओर पुनः ध्यान देना और भक्ति का मार्ग अपनाना प्रारंभ किया। इसी काल के आसपास विभिन्न महापुरुषों–जैसे, इब्राहीम ने इस्लाम धर्म की स्थापना की, बुद्ध ने बौद्ध धर्म और ईशा ने ईशाई धर्म की स्थापना की – के माध्यम से विविध धार्मिक धाराएँ विकसित हुईं, जिन्होंने मानव को सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

अंततः कलियुग का आगमन हुआ। 'कलि' का अर्थ है अंधकार और अज्ञान, कलह-क्लेश। इस युग में मनुष्य तमोगुण से अधिक प्रभावित हो गया। तमोगुण अर्थात वह अवस्था, जिसमें ज्ञान का अभाव और अंधकार का विस्तार होता है। सत्यता, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनंद और शक्ति जैसे दिव्य गुण क्षीण होने लगे, और उनके स्थान पर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

फलस्वरूप, आज संसार में अनेक धर्म, अनेक जातियाँ और अनेक भाषाएँ विद्यमान हैं। यह विविधता जहाँ एक ओर मानव समाज की जटिलता को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर यह संकेत भी देती है कि मनुष्य अपने मूल स्वरूप और एकत्व से दूर होता चला गया है।

आज अनेक मत-मतान्तरों के कारण दुनिया की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह संसार एक वास्तविक नरक बन गया हो। चारों ओर भौतिकता, स्वार्थ, हिंसा और अन्याय का वातावरण है। मनुष्य के जीवन में शांति और सच्चे सुख का अभाव है–हर ओर केवल दुःख ही दुःख दिखाई देता है।

ऐसी परिस्थिति में, प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध (1914–1945) के बीच, सन् 1936 में स्वयं परमात्मा ने इस धरती पर अवतार लिया। उन्होंने सिंध प्रांत के

हैदराबाद में रहने वाले 60 वर्षीय दादा लेखराज को अनेक दिव्य साक्षात्कार कराए, जैसे निराकार ज्योतिर्लिंगम्, महाविनाश, श्री विष्णु, श्री कृष्ण, श्री जगन्नाथ, श्री बद्रीनाथ, श्री श्री केदारनाथ, फिर दादा के तन में प्रवेश करके दादा के मुख से उच्चारा "निजानंद स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्

ज्ञान स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्

प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्

आदि आदि

जिनमें स्वर्ग के सुंदर दृश्य भी सम्मिलित थे।

अंततः निराकार ज्योति-बिंदु स्वरूप भगवान शिव ने दादा लेखराज के शरीर में प्रवेश कर उन्हें 'प्रजापिता ब्रह्मा' नाम दिया। उनके तन, मन और धन के द्वारा 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई।

सन् 1950 में यह संस्था माउंट आबू में स्थानांतरित हुई और वहाँ से इसकी सेवाएँ प्रारंभ हुईं। पहले दिल्ली, फिर पूरे भारत और आज विश्वभर में इस विश्वविद्यालय के सैकड़ों सेवा केंद्र कार्य कर रहे हैं।

इस विश्वविद्यालय में स्वयं भगवान शिव 'शिवबाबा' के रूप में शिक्षक हैं। वे ब्रह्मा के तन के माध्यम से संपूर्ण मानव जाति को राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। इस शिक्षा के चार मुख्य विषय हैं–ज्ञान, योग, धारणा और सेवा।

इन चार विषय का यथार्थ (precise) परिभाषा है:

ज्ञान माना – बाबा का परिचय।

योग माना – बाबा को याद करना ।

धारणा माना – बाप समान बनना।

सेवा माना – सबको बाबा का परिचय देना।

इन चारों विषयों के बारे में बाबा ने जो बोला हैं :

"भाग्य विधाता बाप और भाग्यशाली बच्चे"-- 04/02/1980

"आज ज्ञान-दाता, भाग्य विधाता बाप बच्चों के भाग्य को देख रहे हैं। सर्व श्रेष्ठ आत्माओं का भाग्य कितना श्रेष्ठ है, और कैसे श्रेष्ठ है? जैसे आप सभी बाप का परिचय देते हो तो विशेष ६ बातें सुनाते हो। जिस द्वारा बाप के परिचय को स्पष्ट

करते हो। अगर इन ६ बातों को जान जाएँ तो आत्मा श्रेष्ठ पद को पा सकती है। वर्तमान और भविष्य, दोनों में सर्व प्राप्ति के अधिकारी बन सकते हैं। ऐसे बाप-दादा भी बच्चों के भाग्य को ६ बातों के आधार से देख रहे थे। ६ बातें तो अच्छी तरह से जानते हो?

इस नये वर्ष में विशेष अपने को साक्षात बाप-समान बनाके चारों ओर के तड़पती हुई आत्माओं को लाइट हाउस, माइट हाउस बनकर रास्ता बताते चलो। लक्ष्य रखो कि हर आत्मा को कुछ-न-कुछ देना जरूर है। चाहे मुक्ति चाहे जीवनमुक्ति। कोई मुक्ति वाले हैं तो उनको भी बाप का परिचय देकर मुक्ति का वरदान दो। तो सर्व के प्रति महादानी और वरदानी बन जायेंगे। अपने-अपने स्थान की सेवा तो करते हो लेकिन अभी बेहद के विश्व-कल्याणकारी बनो। एक स्थान पर रहते भी मनसा शक्ति द्वारा, वायुमण्डल और वायब्रेशन द्वारा विश्व-सेवा कर सकते हो। ऐसी पॉवरफुल वृत्ति बनाओ जिससे वायुमण्डल बने।"

"मीठे चच्चे - हर एक की नब्ज देख पहले उसे अल्फ का निश्चय कराओ फिर आगे बढ़ो, अल्फ के निश्चय बिना ज्ञान देना टाइम वेस्ट करना है। अक्सर करके देखा जाता है प्रदर्शनी सर्विस के समाचार भी आते हैं तो मूल बात जो बाप के पहचान की है, उस पर पुरा निश्चय न बिठाने से बाकी जो कुछ समझाते रहते हैं, वह कोई की बुद्धि में बैठना मुश्किल है। भल अच्छा-अच्छा कहते हैं परन्तु बाप की पहचान नहीं। पहले तो बाप की पहचान हो। बाप के महावाक्य हैं मुझे याद करो, में ही पतित पावन हूं। मुझे याद करने से तुम पतित से पावन बन जायेंगे। यह है मुख्य बात। भगवान एक है, वही पतित पावन है। ज्ञान का सागर सुख का सागर है। वही उंच ते उंच है। यह निश्चय हो जाए तो फिर भक्ति मार्ग के जो शास्त्र, वेद अथवा गीता भागवत है, सब खण्डन हो जाएं। भगवान तो खुद कहते है. यह मैने नहीं सुनाया है। मेरा ज्ञान शास्त्रों में नहीं है। वह है भक्ति मार्ग का ज्ञान। में तो ज्ञान दे सद्गति करके चला जाता हूं। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। जब बाप का निश्चय बैठे तो समझे, भगवानुवाच – यह भक्ति मार्ग के शास्त्र है। ज्ञान, और भक्ति आधा-आधा चलती है। भगवान जब आते हैं तो अपना परिचय देते हैं – मैं कहता हूं 5 हजार वर्ष का कल्प है, मैं तो ब्रह्मा मुख से समझा रहा हूं। तो पहली मुख्य बात बुद्धि में बिठानी है कि भगवान कौन है? यह बात जब तक बुद्धि में नहीं बैठी है तब तक और कुछ भी समझाने से कुछ असर नहीं होगा। सारी मेहनत ही इस बात में है। बाप आते ही है कब्र से जगाने। शास्त्र आदि पढ़ने से तो नहीं जगेंगे। परम आत्मा है ज्योति स्वरूप तो उनके बच्चे भी ज्योति स्वरूप है। परन्तु तुम बच्चों की आत्मा पतित बनी है. जिस कारण ज्योति

बुझ गई है। तमोप्रधान हो गये है। पहले पहले बाप क का परिचय न देने से फिर जो भी मेहनत करते हैं. ओपीनियन सादि लिखाते है वह कुछ काम का नहीं रहता इसलिए सर्विस होती नहीं है। निश्चय हो तो समझे बरोबर ब्रह्मा द्वारा ज्ञान दे रहे है। मनुष्य ब्रह्मा को देख कितना मूंझते हैं क्योंकि बाप की पहचान नहीं है। समझाने वाले भी नम्बरवार होते हैं। बाबा रोज़ पुरुषार्थ कराते हैं। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। बच्चों में तिक विक करने की आदत बहुत है। बाप को याद करते ही नहीं। याद करना बड़ा कठिन है। बाप को याद करना छोड़ अपनी ही तिक-तिक सुनाते रहते हैं। बाप के निश्चय बिगर और चित्रों तरफ बढ़ना ही नहीं चाहिए। निश्चय नहीं तो कुछ भी समझेंगे नहीं। अल्फ का निश्चय नहीं तो बाकी बे ते में जाना टाइम वेस्ट करना है। किसकी नब्ज को जानते नहीं, ओपनिंग करने वाले को भी पहले बाप का परिचय देना है। यह है ऊंच ते ऊंच बाप ज्ञान का सागर। बाप यह ज्ञान अभी ही देते हैं। । तुम बच्चे बैठ समझाते हो परन्तु खुद का ही बाबा से योग नहीं तो औरों को क्या समझा सकेंगे।

जो बच्चे ज्ञानी तू आत्मा के साथ-साथ योगी नहीं बनते है, उनमें देह अभिमान का अंश जरूर होगा। योग के बिगर समझाना कोई काम का नहीं। फिर देह अभिमान में आकर किसी न किसी को तंग करते रहेंगे। बच्चे भाषण अच्छा करते हैं तो समझते है हम ज्ञानी तू आत्मा है। बाप कहते है ज्ञानी तू आत्मा तो हो परन्तु योग कम है, योग पर पुरुषार्थ बहुत कम है। बाप कितन समझाते हैं -- चार्ट रखो। मुख्य है ही योग की बात। बच्चों में ज्ञान के समझाने का शौक तो है लेकिन योग नहीं है। तो योग बिगर विकर्ण विनाश नहीं हैं। परन्तु बाबा कहते 2 प्रतिशत हैं। । अल्फ बिगर काम कैसे चलेगा? एक अल्फ का पता नहीं बाकी तो बिन्दी, बिन्दी हो जाती। अल्फ के साथ बिन्दी देने से फायदा होता है।

तो जब भी कोई अच्छा आदमी आये तो पहले-पहले उनको बाप का परिचय दो। हां, सर्विस करने वालों का पद उंच है। बाकी का कम पद होगा। यह पक्का ख्याल रखो। बाबा कहते हैं पहले-पहले तो गांठ बांधो-बाप के याद की। बाप कहते हैं मुझे याद करो। जितना हो सके बापको याद करते रहो। यह पुरुषार्थ है गुप्त । बाबा राय देते हैं, परिचय भी बाप का ही दो । याद कम करते हैं तो परिचय भी कम देते हैं। पहले तो बाप का परिचय बुद्धि में बैठे। बोलो, अब लिखो बरोबर वह हमारा बाप है। याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। आपस में भी यही बातें करो । लायक भी बनना चाहिए ना। ब्राह्मण होकर और बाप की रूहानी सेवा न करे तो क्या काम का! पढ़ाई को तो अच्छी रीति धारण करना चाहिए ना। बाबा जानते हैं बहुत हैं जिनके एक अक्षर भी धारण नहीं होता है। यथार्थ रीति

बाप को याद करते नहीं हैं। बाप तो है कल्याणत्यारी। तो कल्याण के लिए ही राय देते हैं। कल्याण तो सारी दुनिया का होना है। परन्तु नम्बरवार हैं। तुम यहाँ बाप के पास पढ़ने के लिए आये हो। तुम्हारे में भी वह स्टुडेन्ट अच्छे हैं जो पढ़ाई पर ध्यान देते हैं। कोई तो बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं। पढ़ाई का एम ही नहीं है। ". 25/04/2020 रिपीट 09/04/2025 (सकार मुरली)

इसके साथ 02.01.1980 की अव्यक्त वाणी – "आने वाली दुनिया कैसी होगी?" — का अध्ययन करना भी अत्यंत आवश्यक है। उस वाणी को किसी भी प्रकार से संक्षिप्त करना संभव नहीं है, क्योंकि उसमें निहित प्रत्येक शब्द अपने आप में गहन अर्थ और दिव्य संदेश समेटे हुए है। अतः उसे पूर्ण रूप से, सम्पूर्ण ध्यान और श्रद्धा के साथ पढ़ना अनिवार्य है। इसी कारण उस वाणी को इस पुस्तक के उपसंहार (Epilogue) के रूप में स्थान दिया गया है, जो निःसंदेह इस पुस्तक के सौष्ठव और गरिमा में वृद्धि करेगा। विशेष रूप से ईश्वरीय विद्यार्थियों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे इन तीन विशेष मुरलीओं को गहराई से अध्ययन करें और उन्हें अच्छी तरह समझें। केवल वर्षों तक ज्ञान में चलते रहना, या नियमित रूप से मुरली सुनना ही पर्याप्त नहीं है। यदि आत्मा में उस ज्ञान की सच्ची अनुभूति और योग की गहराई नहीं आई, तो व्यक्ति स्वयं को ज्ञानी मानते हुए भी वास्तविकता में उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसे में सेवा के नाम पर भी केवल औपचारिकता ही रह जाती है। सर्विस के जगह डिस्सार्विस करते रहेंगे!

अतः आवश्यक है कि हम सच्चे मन से आत्मचिंतन करें, योग की गहराई को अनुभव करें और ज्ञान को जीवन में उतारते हुए सच्ची सेवा का मार्ग अपनाएं।

इस पुस्तक में राजयोग के मूल सार को गहराई और विस्तार के साथ अत्यंत सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो भी साधक इस पुस्तक का केवल सरसरी अध्ययन न करके गंभीरतापूर्वक मनन करेगा तथा इसके अनुसार अभ्यास करेगा, हमारा दृढ़ विश्वास है कि वह चाहे ब्रह्माकुमारी परिवार से जुड़ा हो या एक नया जिज्ञासु, वह वास्तविक अर्थ में ज्ञानी, योगी और श्रेष्ठ सेवाधारी अवश्य बनेगा।

*****

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

प्रथम अध्याय

एक अद्भुत आध्यात्मिक महा-नाटक

(FULL PROFESSIONAL BK STAGE DRAMA VERSION)

भव्य मंगलाचरण (GRAND OPENING)

दृश्य 1 : दिव्य उद्घोषणा (पूरा मंच अंधकारमय।)

(धीरे-धीरे शंखध्वनि। फिर घंटियों की मधुर ध्वनि। फिर "ॐ" की गहरी गूँज। नीला-सफेद दिव्य प्रकाश फैलता है। हल्का धुआँ। पृष्ठभूमि में ब्रह्मांड, तारे, पृथ्वी का दृश्य। उद्घोषक अत्यंत गंभीर, प्रभावशाली और आत्मिक स्वर में प्रवेश करता है।)

उद्घोषक :

प्रिय श्रद्धेय श्रोता एवं दर्शक-वृन्द...

सादर प्रणाम।

आज जो आप देखने जा रहे हैं...

वह केवल एक नाटक नहीं है : यह–

एक प्रश्न है। एक पुकार है।

एक चेतावनी है। एक निमंत्रण है।

और...

एक दिव्य घोषणा है।

यह कहानी नहीं– सत्य है।

कल्पना नहीं– अनुभूति है।

मनोरंजन नहीं– आत्मा का जागरण है।

आज संसार दुःखी है... मनुष्य के पास साधन हैं–

लेकिन शांति नहीं। विज्ञान है– लेकिन विवेक नहीं।

धर्म हैं– लेकिन धर्मात्मा नहीं। मंदिर हैं– लेकिन मिलन नहीं।

मस्जिद हैं– लेकिन मौन नहीं। चर्च हैं– लेकिन चित्त की शांति नहीं। गुरुद्वारे हैं– लेकिन भीतर गुरु नहीं।

हर हृदय से एक ही पुकार उठ रही है–

"हे भगवान... अब आ जाओ..." "या अल्लाह... रहमत करो..."

"O God... Save us..."

और जब पुकार सच्ची होती है... तो परमपिता अवश्य आते हैं।

आज का यह महा-नाटक

उसी दिव्य सत्य पर आधारित है– भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

आपसे केवल एक विनम्र निवेदन है–

केवल एक घंटे के लिए

अपने संदेह को विराम दें... तर्क को शांत करें... और आत्मा को सुनने दें... क्योंकि... हो सकता है... आज की यह रात...

आपके जीवन की दिशा बदल दे।

तो आइए...

आरम्भ करते हैं... विश्व की महान आध्यात्मिक संस्था

"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय"

द्वारा रचित, निर्देशित और अभिनीत

चारों युगों का यह दिव्य महा-नाटक–

"भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं..."

(तेज प्रकाश। संगीत उभरता है। पर्दा खुलता है।)

दृश्य 2 : पुकार

(मंच पर 15–20 साधक ध्यानमग्न बैठे हैं।)

(मंद दीपक। धूप। घंटी। शांति का वातावरण।)

समूह प्रार्थना (गीत)

भगवान है कहां रे तू....

हे खुदा है कहां रे तू....

यदा यदा हि धर्मस्य

ग्लानिर्भवति भारत...

(धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ता है।)

(अचानक आकाशीय ध्वनि। हेलिकॉप्टर की आवाज़।)

(ऊपर से पर्चे गिरते हैं।)

(सभी चौंकते हैं।)

दृश्य 3 : सनसनी (SUSPENSE ENTRY)

सारे श्रोता-दर्शकों को पर्चे बांटेंगे

(राजेश, दिनेश, इकबाल, सिमरण, जोसेफ दौड़ते हुए प्रवेश करते हैं।)

सभी (चीखते हुए)

भगवान आये हैं!! अल्लाह आये हैं!! GOD आये हैं!!

(भागते-भागते सब एक-दूसरे पर गिर पड़ते हैं। हल्का हास्य।)

बी.के. रमेश प्रवेश (शांत, तेजस्वी, मुस्कराते हुए)

बी.के. रमेश

क्या हुआ भाई? इतनी भगदड़ क्यों?

दिनेश (साँस फूलती हुई)

भाई साहब... सचमुच भगवान आ गये हैं!

इकबाल

अल्लाह आ गये हैं!

जोसेफ

God has come!

बी.के. रमेश

अच्छा...? (रुककर) कहाँ आये हैं?

सभी

ब्रह्माकुमारीज़ में!! ओम् शान्ति में!! ब्रह्मा बाबा के तन में!!

(मंच पर रहस्यपूर्ण संगीत)

दृश्य 4 : मातृवत प्रवेश- बी.के. रानी प्रवेश (मातृ-स्नेह, दिव्य मुस्कान)

बी.के. रानी

प्यारे बच्चों...

इतनी बड़ी खबर और बिना चाय के?

भगवान आये हों तो स्वागत भी दिव्य होना चाहिए!

(हल्की हँसी)

बी.के. हर्षिता प्रवेश

(चाय + टोली + मुस्कान)

बी.के. हर्षिता

पहले चाय... फिर परमात्मा। (सब हँसते हैं)

(बी.के. रमेश पर्चा उठाते हैं)

दृश्य 5 : दिव्य संकेत (DIVINE VOICE EFFECT)

(पूरा मंच अंधकारमय – सिर्फ स्पॉटलाइट)

(गहरी गूँजती हुई अव्यक्त वाणी)

अव्यक्त वाणी :

मेरे अति प्यारे... मीठे-मीठे बच्चों... तुम अपने ही भीतर बसे

काम... क्रोध... लोभ... मोह... और अहंकार...

इन पाँच विकारों के कारण दुःखी हो।

मैं... तुम्हारा सत्य पिता हूँ। कल्याणकारी बाप हूँ।

तुम्हारी पुकार सुनकर... मैं आ चुका हूँ।

तुम्हें अंधकार से प्रकाश में... नर से नारायण में...

नारी से लक्ष्मी में... और दुःख से मुक्ति में ले जाने।

जल्दी करो... शुभस्य शीघ्रम्। अभी नहीं... तो कभी नहीं।

(पूरा मंच मौन। सभी स्तब्ध। धीमा संगीत)

दृश्य 6 : भावनात्मक विस्फोट

इकबाल

मैंने अल्लाह को मस्जिदों में खोजा...

जोसेफ

मैंने God को Church में खोजा...

सिमरण

मैंने वाहेगुरु को गुरुद्वारे में खोजा...

राजेश

मैंने भगवान को मंदिरों में खोजा...

दिनेश

और मैंने... पूरी जिंदगी... अपने भीतर के खालीपन में खोजा...(रो पड़ता है)

बी.के. रमेश

क्योंकि... वह बाहर नहीं... तुम्हारा बाबा हैं। और बाप... अपने बच्चे को कभी छोड़ता नहीं। (सभी भावुक)

(पृष्ठभूमि गीत उभरता है)

वसुधा के इसी अंचल में...

शिव स्वागत है तुम्हारा...

प्रथम अंक समाप्त

(पर्दा धीरे-धीरे गिरता है)

यह केवल आरम्भ है।

आगे आएगा–

SECOND ACT (ईश्वर का वास्तविक परिचय ,भगवान सर्वव्यापी हैं या नहीं? आत्मा कौन? परमधाम कहाँ? सबसे बड़ा आध्यात्मिक संघर्ष – दिनेश का विद्रोह

और...

विस्फोटक क्लाइमेक्स

"भगवान हैं कौन?"

"उनका रूप, गुण, नाम, धाम, काम, काल क्या हैं?"

"उन से हमारा सम्बन्ध क्या है?"

"वह हमारा बाप है।"

"सबके कितने बाप हैं?"

"दो बाप हैं"

"हम कौन?"

"आत्मा!"

"अगला भाग होगा–

ACT 2 : ईश्वर का रहस्योद्‌घाटन (MASTERPIECE CLIMAX BUILDUP)

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

Room – रहस्य के द्वार पर)

(मंद प्रकाश। पृष्ठभूमि में मधुर वाद्य-संगीत।)

(दीवारों पर क्रमशः चित्र प्रकाशित होते हैं–)

परमात्मा शिव ज्योति-बिंदु रूप हैं

त्रिमूर्ति

तीन लोक

आत्मा

सृष्टि चक्र

कल्पवृक्ष

84 जन्म

लक्ष्मी-नारायण

राजयोग की यात्रा : नर्क से स्वर्ग की ओर

(राजेश, दिनेश, इकबाल, सिमरण और जोसेफ विस्मय से चित्रों को निहार रहे हैं।)

(बी.के. रमेश शांत, तेजस्वी मुद्रा में प्रवेश करते हैं।)

बी.के. रमेश

प्यारे भाइयों... कहीं ऐसा तो नहीं

कि हमारी वजह से आपको भगवान से मिलने में देर हो गई?

राजेश

सॉरी भैया... पर सच कहूँ– हम बहुत खुश हैं।

बी.के. रमेश

बहुत खुश? क्यों भाई?

जोसेफ

क्योंकि... यही तो हमारी मंज़िल है।

जिस सत्य की तलाश में हम जीवन भर भटकते रहे...

लगता है आज उसी के द्वार पर आ पहुँचे हैं।

बी.के. रमेश

(धीरे, रहस्यपूर्ण स्वर में)

प्यारे भाइयों...

आप सब अत्यंत भाग्यशाली हैं। क्योंकि... आपको वह पैगाम मिला है... जिसकी प्रतीक्षा मानवता युगों से कर रही थी।

भगवान... अल्लाह... God... वाहेगुरु... वही एक परमपिता...

इस धरती पर आ चुके हैं।

(हल्का दिव्य संगीत)

इकबाल

(उत्साह और भय के मिश्रण में)

तो क्या... हम सचमुच भगवान से मिल सकते हैं?

बी.के. रमेश

कोटों में कोई... और कोई ओं में भी कोई...

ऐसी भाग्यशाली पुण्यात्मा ही उस मिलन की अधिकारी बनती है।

दिनेश

(व्यावहारिक अंदाज़ में)

भाग्यशाली मतलब धनवान? हम तो धनवान नहीं...

तो क्या भगवान से मिलने के लिए भी रिश्वत देनी पड़ेगी?

(सब हल्का मुस्कुराते हैं)

बी.के. रमेश

(स्नेह और गहराई से)

नहीं भाई... भाग्यवान वह नहीं – जिसके पास धन हो।

भाग्यवान वह है– जो धैर्यवान हो... युक्तिवादी हो...

और सत्य को परखने वाला हो।

सिमरण

(दृढ़ स्वर में)

तो हम तैयार हैं। जितना धैर्य चाहिए – हम रखेंगे।

लेकिन... भगवान से मिलना जरूर है!

बी.के. रमेश

(मुस्कुराकर)

***जब संकल्प इतना दृढ़ हो... तो मिलन* निश्चित है।**

तो अब सुनिए–

दृश्य 2 : संस्था का परिचय

बी.के. रमेश

बताइए...

हमारी संस्था का नाम क्या है?

दिनेश

ओम् शान्ति।

जोसेफ

ब्रह्माकुमारी।

बी.के. रमेश

(मुस्कराकर)

नहीं।

"ओम् शान्ति"

हमारी पहचान है।

और

"ब्रह्माकुमारी" नहीं...

"ब्रह्माकुमारीज़"।

हमारी संस्था का पूर्ण नाम है–

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

दिनेश

(आश्चर्य से) इतना लंबा नाम!

बी.के. रमेश

हाँ... और जैसे नाम विराट है... वैसे ही – इसका कार्यक्षेत्र भी विराट है। राजस्थान के – माउंट आबू में इसका मुख्यालय है। भारत ही नहीं... विश्व के 150 से अधिक देशों में इसके हजारों सेवा केन्द्र हैं। सबसे अद्भुत बात यह है– (प्रकाश केंद्रित) इस विश्वविद्यालय के **लेकिन**...**संस्थापक**... **और शिक्षक**... **स्वयं भगवान हैं। यहाँ – स्वयं भगवान पढ़ाते हैं। (आश्चर्य संगीत)**

दिनेश

(अचानक खड़ा होकर)

क्या?!

भगवान पढ़ाते हैं?! इसका कोई प्रमाण है?

बी.के. रमेश (तेजस्वी स्वर में)

यही तो पहला पाठ है– भगवान पहले स्वयं अपना परिचय देते हैं।

दृश्य 3 : ईश्वर का दिव्य परिचय

(रूप – गुण – नाम – धाम – काम – काल)

(प्रकाश मंद। पीछे ज्योति-बिंदु प्रकाशित।)

(रहस्यपूर्ण संगीत)

बी.के. रमेश

ईश्वर... स्वयंभू हैं। वे स्वयं आते हैं... और स्वयं अपना परिचय देते हैं। विशेष छः बातों से– रूप, गुण, नाम, धाम, काम, काल

दिनेश

तो पहले– बताइए – ईश्वर का रूप कैसा हैं!

बी.के. रमेश

ईश्वर का रूप– बिंदु रूप है – न लंबाई... न चौड़ाई... न ऊँचाई...

वे निराकार हैं। कोई भी देहधारी भगवान नहीं हो सकता।

दिनेश (चौंककर)

तो... कृष्ण? विष्णु ? राम? हनुमान? गणेश?

क्या वे भगवान नहीं?

बी.के. रमेश

पहले पूरी बात सुनो। वे पूज्य हैं... देवता हैं... लेकिन

परमपिता परमात्मा नहीं।

गुण – रूप में बिन्दु परंतु

गुणों में सिन्धु माना सागर : ज्ञान का सागर – पवित्रता का सागर – शान्ति का सागर प्रेम का सागर – सुख का सागर – आनन्द का सागर सर्वशक्तिमान !

ईश्वर– ज्योति-स्वरूप हैं। ज्ञान-ज्योति देकर सबकी सद्गति करते हैं। इसीलिए– उन्हें ज्योतिर्लिंगम् कहा गया। ***सोमनाथ, केदारनाथ, विश्वनाथ, वैद्यनाथ, मल्लिकार्जुन, रामेश्वरम्, नागेश्वर,घृष्णेश्वर, त्रीयम्बकेश्वर, ओम्कारेश्वर,***

महाकालेश्वर, यह 12 ज्योतिर्लिंगम् विश्वविख्यात है। ऐसे तो अनगिनत ज्योतिर्लिंगम् हैं।

जोसेफ

तो इतने सारे नाम क्यों?

बी.के. रमेश

वे सब गुणवाचक नाम हैं। लेकिन वास्तविक नाम– एक ही है। शिव

सभी

शिव?!

बी.के. रमेश

हाँ। शिव–शव+इव – शव माना शरीर, इव माना बिहीन

अर्थात शरीर से रहित। वह सदाशिव हैं। सर्दी गर्मी निन्दा स्तुति

मान अपमान सबमें समान।

सदा सत्य। "सत्यमेव जयते" सदा सुंदर। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

सदा शान्त। सदा पावन। पतित पावन सदा चैतन्य। सदा कल्याणकारी। सदा बीज रूप – माना सदा गुप्त

धाम – परमधाम, मुक्तिधाम, निर्वाणधाम, शान्तिधाम...

काम – तीन काम : ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना, विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना शंकर द्वारा नर्क का विनाश

काल – "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्यूत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।"

जब होती है धर्म की ग्लानि अधर्म अनाचार व्याभिचार

भ्रष्टाचार लड़ाई झगड़े – तब आते हैं भगवान भारत में

इसलिए हम गाते है "भारत भाग्य विधाता" "मेरा भारत महान"

दृश्य 4 : सबसे बड़ा टकराव (सर्वव्यापकता का संघर्ष)

बी.के. रमेश

अब मैं पूछता हूँ– ईश्वर के साथ आपका संबंध क्या है?

दिनेश

हम पूजा करते हैं... प्रार्थना करते हैं... बस।

बी.के. रमेश

नहीं। ईश्वर– परमपिता हैं। बाप हैं। और यदि वह बाप हैं...

तो हम सबके– दो बाप हैं।

सभी (एक साथ)

दो बाप?!

बी.के. रमेश

हाँ। एक– लौकिक बाप। दूसरा– पारलौकिक बाप। इसलिए–

सबका मालिक एक है। हम सब भाई-भाई हैं।

दिनेश

लेकिन... लोग कहते हैं– भगवान सर्वव्यापी हैं। कण-कण में हैं।

घट-घट में हैं। क्या यह गलत है? (तनावपूर्ण संगीत)

बी.के. रमेश (गंभीर स्वर)

हाँ। यह भ्रम है।

दिनेश (क्रोध में उठता है)

क्या कहा आपने?! भगवान सर्वव्यापी नहीं?! तो क्या...

हमारे ऋषि-मुनि गलत थे?! क्या हमारी पूरी आस्था झूठ थी?!

तो फिर हम यहाँ समय क्यों बर्बाद कर रहे हैं?!

(वह जाने लगता है, चारों मित्र रोकते हैं, मंच पर तीव्र संगीत)

बी.के. रमेश (पूर्ण शांति से)

भाई... यदि भगवान सर्वव्यापी हैं... तो आपको उनसे मिलने

यहाँ आने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

दिनेश (मौन)

बी.के. रमेश

यदि कण-कण में भगवान हैं– तो मिट्टी भी आपका बाप?

पत्थर भी आपका बाप? कीड़े-मकोड़े भी आपका बाप?

क्या आप मानेंगे?

सभी

नहीं!!!

बी.के. रमेश

सर्वव्यापी भगवान नहीं हैं। सर्वव्यापी तो– काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं। (गंभीर मौन)

दृश्यांत

(सभी पात्र स्तब्ध)

(धीरे-धीरे प्रकाश मंद होता है)

(***पृष्ठभूमि गीत)***

वसुधा के इसी अंचल में...

शिव स्वागत है तुम्हारा...

ACT 2 समाप्त

आगे आएगा—

ACT 3 : आत्मा कौन?

परमधाम कहाँ?

दिनेश का पूर्ण परिवर्तन

और विस्फोटक अंतिम क्लाइमेक्स

“हम कौन?”

"आत्मा!"

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

ACT 3 : आत्मा का रहस्य, परमधाम का परिचय और विस्फोटक अंतिम क्लाइमेक्स

प्रथम **दृश्य** : आत्मा कौन?

(मंच पर मंद प्रकाश। पृष्ठभूमि में "आप एक आत्मा हैं" का चित्र प्रकाशित।)

(हल्का, शांत, आत्मिक संगीत।)

(दिनेश गहरी सोच में बैठा है। बाकी सभी शांत हैं। बी.के. रमेश उसके पास आते हैं।)

बी.के. रमेश

दिनेश भाई... अब बताइए–आप कौन हैं?

दिनेश

मैं... दिनेश हूँ।

बी.के. रमेश (मुस्कुराकर)

नाम नहीं। यह हाथ... आपका है। लेकिन आप हाथ नहीं।

यह शरीर... आपका है। लेकिन आप शरीर नहीं। तो आप कौन?

दिनेश

(मौन... फिर धीरे)

तो... मैं कौन हूँ?

बी.के. रमेश

आप– आत्मा हैं।

(प्रकाश भृकुटि के स्थान पर केंद्रित)

बी.के. रमेश

आत्मा एक सूक्ष्म, दिव्य, चेतन ज्योति-बिंदु है। उसकी तीन मुख्य शक्तियाँ हैं– मन, बुद्धि और संस्कार। आत्मा इस शरीर रूपी रथ की चालक है। और उसका निवास– भृकुटि के मध्य।

सिमरण

तो जब शरीर मरता है... आत्मा मरती नहीं?

बी.के. रमेश

नहीं। आत्मा अजर है। अमर है। अविनाशी है। गीता में भी कहा है–

"**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।**

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

आत्मा को न शस्त्र काट सकता है न अग्नि जला सकती है। न जल उसे भीगो सकता है और न वायु उसे सुखा सकति है।

दिनेश

(भाव-विभोर होकर)

अद्भुत... इतना बड़ा सत्य... और हम जीवन भर अपने को केवल शरीर समझते रहे...

द्वितीय दृश्य : परमधाम कहाँ?

(मंच पर "तीन लोक" का चित्र प्रकाशित होता है।)

(प्रकाश ऊपर की ओर जाता है।)

बी.के. रमेश

अब सुनिए– हमारा घर कहाँ है? यह पृथ्वी... इसके ऊपर चन्द्रमा... सूर्य... सितारे... उससे ऊपर– सूक्ष्म लोक। और

सबसे ऊपर– परमधाम/ शान्तिधाम/ मुक्ति धाम/ Sweet Silence Home

जोसेफ

वहीं God रहते हैं?

बी.के. रमेश

हाँ। वहीं परमपिता परमात्मा निवास करते हैं। और वहीं–

हम आत्माओं का भी मूल घर है। हम सब यहाँ केवल कलाकार हैं।

यह संसार– एक विश्व-नाटक है।

(गंभीर स्वर में)

अंग्रेज कवि और नाटककार William Shakespeare ने कहा :

"***All the world's a stage,***

And all the men and women merely players."

हम आते हैं... अपना-अपना पार्ट बजाते हैं... और चले जाते हैं।

लेकिन...Creator? Director? Supreme Hero?

वह एक ही है– शिवबाबा

त्रितीय दृश्य : दिनेश का पूर्ण परिवर्तन

(मंच पर हल्का भावुक संगीत।)

(दिनेश धीरे-धीरे खड़ा होता है। उसकी आँखें नम हैं।)

दिनेश

भाई... आज तक मैंने सब कुछ गलत समझा। मैंने भगवान को

मंदिरों में खोजा... मैंने सत्य को पुस्तकों में खोजा... मैंने शांति को

दुनिया में खोजा... लेकिन... मैंने स्वयं को कभी नहीं खोजा। आज... पहली बार लगता है– मैंने अपने पिता को पा लिया।

मैंने अपने घर का रास्ता पा लिया। मैंने अपने अस्तित्व को पा लिया।

(वह बी.के. रमेश के चरणों की ओर झुकता है)

बी.के. रमेश

(उसे उठाते हुए)

नहीं भाई... झुकना है तो उस परमपिता के सामने झुको... मैं भी

उसी का बच्चा हूँ। हम सब– भाई-भाई हैं।

इकबाल

आज समझ आया– अल्लाह एक है।

जोसेफ

God is One.

सिमरण

वाहेगुरु एक है।

राजेश

और वही– हम सबका पिता है।

दृश्य : अंतिम संकल्प

(बी.के. रमेश सभी को एक कागज़ देते हैं।)

बी.के. रमेश

अब... यदि आपने सत्य को स्वीकार किया है– तो अपने हृदय से

यह संकल्प कीजिए। लिखिए– हम आत्मा हैं। परमपिता परमात्मा

हमारे बाप हैं। हम सबके दो बाप हैं– एक लौकिक एक पारलौकिक। हम सब आपस में भाई-भाई हैं। भगवान सर्वव्यापी नहीं– परमधाम के वासी हैं।

(सभी लिखते हैं।)

(फिर एक साथ खड़े होते हैं।

दृश्य : विस्फोटक अंतिम क्लाइमेक्स

(तेज प्रकाश। दिव्य संगीत। पृष्ठभूमि में शिव-ज्योति प्रकाशित।)

बी.के. रमेश

(उच्च स्वर में)

मैं पूछता हूँ–

हम कौन?

सभी

(एक स्वर में, जोशपूर्ण)

आत्मा!!

बी.के. रमेश

हमारा बाप कौन?

सभी

परमपिता परमात्मा!!

बी.के. रमेश

हमारा धर्म?

सभी

शांति!!

बी.के. रमेश

हमारा लक्ष्य?

सभी

नर से नारायण!! नारी से लक्ष्मी!!

बी.के. रमेश

हमारा घर?

सभी

परमधाम!!

बी.के. रमेश

हमारा पथ?

सभी

राजयोग!!

सभी मिलकर

भगवान आये हैं!!

अल्लाह आये हैं!!

GOD आये हैं!!

शिवबाबा आये हैं!!

(पूरा मंच दिव्य प्रकाश से भर जाता है।)

(पृष्ठभूमि में अंतिम गीत)

♫

वसुधा के इसी अंचल में...

शिव स्वागत है तुम्हारा...

भगवान आये हैं...

अल्लाह आये हैं...

God आये हैं...

शिवबाबा आये हैं...

♫

अंतिम संदेश (उद्घोषक)

प्रिय दर्शकों...

यदि आज

आपके भीतर

एक भी प्रश्न जागा...

तो यह नाटक सफल है।

यदि

एक भी भ्रम टूटा...

तो यह नाटक सफल है।

यदि

एक भी आत्मा ने

अपने पिता को पहचान लिया...

तो यह नाटक सफल है।

ओम् शान्ति।

सम्पूर्ण नाटक समाप्त

"भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं..."

(FULL PROFESSIONAL BK STAGE DRAMA VERSION COMPLETE)

*****

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

द्वितीय अध्याय

भगवान बाप का सत्य और यथार्थ परिचय

(परमपिता परमात्मा का सत्य और यथार्थ परिचय)

(एक वास्तविक अंतरराष्ट्रीय स्तर का आध्यात्मिक दस्तावेज)

दुनिया भर में बहुत से लोगों ने ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में सुना है और इस संस्था के बारे में कुछ सामान्य जानकारी भी रखते हैं।

लेकिन अधिकांश लोग उस सर्वोच्च व्यक्तित्व से अनजान हैं–उस दिव्य सत्ता से–जिसने इस ईश्वरीय संस्था की स्थापना की, जो इसमें शिक्षा देता है, और जो सबसे उच्च, सबसे प्रामाणिक और सबसे आवश्यक सत्ता है, जिसे जानना अत्यंत आवश्यक है।

नीचे उस सर्वोच्च सत्ता का सत्य और यथार्थ परिचय प्रस्तुत है :

रूप, गुण नाम, धाम, काम, काल

ईश्वर सभी आत्माओं का पिता है

ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है

ईश्वर सबसे ऊँचा है

आप कौन हैं? आप एक आत्मा हैं

5000 वर्ष का विश्व नाटक

1936 में शिव बाबा का प्रवेश

ब्रह्माकुमारी संस्थान की स्थापना

अंतिम निमंत्रण

हमारी संस्था का पूरा नाम है :

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

जैसा इस विश्व विद्यालय का नाम विशाल है, वैसा ही इसका कार्यक्षेत्र और प्रभाव भी विशाल है।

भारत के कोने-कोने में इसकी शाखाएँ हैं और संसार के लगभग सभी प्रमुख देशों में इसके सैकड़ों सेवा केंद्र हैं।

सबसे पहला, प्रमुख, अद्वितीय और सबसे महत्वपूर्ण सत्य यह समझना है :

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के शिक्षक स्वयं परमात्मा हैं – परमपिता, परम् आत्मा। इसलिए इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय का पहला और सबसे आवश्यक पाठ है परमात्मा का परिचय /बाबा का यथार्थ परिचय।

यद्यपि इस विश्वविद्यालय के अनेक विद्यार्थी कहते हैं : "आत्मा पहला पाठ है", परंतु यह पूर्णतः सही नहीं है।

स्वयं भगवान ने अपनी महावाक्य (मुरली) दिनांक 5 दिसंबर 2020 में स्पष्ट कहा:

"बाबा आत्मा का ज्ञान भी तुमको तब देता हैं जब समझदार बनते हो।"

इससे स्पष्ट होता है कि जब परमात्मा इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, तो सबसे पहले वे आत्मा का नहीं, बल्कि अपना परिचय देते हैं।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में परमात्मा को स्वयंभू कहा जाता है–

अर्थात् जो स्वयं विद्यमान है, स्वयं समर्थ है, स्वयं पर आधारित है।

स्वयम्भू स्वयं आकर स्वयम् का परिचय देते है।

वह अपने को छह मुख्य पहलुओं द्वारा प्रकट करता है :

रूप, गुण नाम, धाम, काम, काल

अव्यक्त मुरली (4 फरवरी 1980) में बाबा ने कहा : जैसे आप सभी बाप का परिचय देते हो तो विशेष 6 बातें सुनाते हो। जिस द्वारा बाप के परिचय को स्पष्ट करते हो। अगर यह 6 बातों को जान जाए तो आत्मा श्रेष्ठ पद को पा सकती है।

वर्तमान और भविष्य दोनों में सर्व प्राप्ति के अधिकारी बन सकते हैं।"--अव्यक्त वाणी 4/2/1980.

रूप

रूप में परमात्मा एक बिंदु हैं। बिंदु वह सत्ता है जो अस्तित्व रखती है, परंतु जिसकी कोई लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई नहीं होती। वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सबसे सूक्ष्म और सबसे लघुतम सत्ता हैं।

वह हैं :

निर्गुण (अशरीरी), अविभाज्य, अविनाशी, अदृश्य, देह से परे

इसलिए कोई भी देहधारी प्राणी भगवान नहीं कहलाया जा सकता।

जिसके पास स्थूल शरीर है, वह सर्वोच्च परमात्मा नहीं हो सकता।

परमात्मा ज्योति-स्वरूप हैं–दिव्य प्रकाश की मूर्ति।

वह स्वयं प्रकाशित, अति सूक्ष्म, आध्यात्मिक प्रकाश-बिंदु हैं।

वह सभी मानव आत्माओं को दिव्य प्रकाश–अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान और सच्चा बोध–प्रदान करते हैं तथा उन्हें मुक्ति और जीवन-मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।

इसी कारण उन्हें कहा जाता है : ज्योतिर्लिंगम्

(ज्योति = प्रकाश/ ज्ञान, लिंगम् = प्रतीक)

अतः ज्योतिर्लिंगम् का अर्थ है:

"दिव्य प्रकाश का प्रतीक"

दुनिया में, विशेषकर भारत में, असंख्य ज्योतिर्लिंगम् हैं।

उनमें से ***बारह ज्योतिर्लिंगम् विश्वविख्यात माना जाता है :***

सोमनाथ, केदारनाथ, विश्वनाथ, वैद्यनाथ, मल्लिकार्जुन, रामेश्वरम्, नागेश्वर, घृष्णेश्वर, त्र्यंबकेश्वर, भीमाशंकर, ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर

ये सभी उस निराकार परम ज्योति–शिव बाबा–की स्मृति में बने प्रतीकात्मक स्मारक हैं।

गुण (ATTRIBUTES)

रूप में परमात्मा एक बिंदु हैं, लेकिन गुणों में वह एक अनंत सिन्धु माना सागर हैं।

यद्यपि वे अस्तित्व के सबसे छोटा और सूक्ष्मतम् स्वरूप हैं,

फिर भी उनके दिव्य गुण अनंत, असीम और अपार हैं।

इसीलिए उन्हें कहा जाता है:

ज्ञान का सागर (Ocean of Knowledge)

वे सर्वोच्च शिक्षक हैं।

वे सम्पूर्ण सृष्टि के आदि, मध्य और अंत के ज्ञाता हैं।

वे प्रकट करते हैं रहस्य:

परमात्मा का, अनादि विश्व नाटक का, समय चक्र का, आत्मा का,

कर्म, अकर्म और विकर्म का, स्वर्ग और नरक का, मुक्ति और जीवन-मुक्ति का, मानवता के भूत, वर्तमान और भविष्य का।

कोई भी मनुष्य, चाहे कितना भी ज्ञानी क्यों न हो, इस सम्पूर्ण ज्ञान का अधिकारी नहीं हो सकता। केवल परमात्मा ही ज्ञान का सागर हैं।

पवित्रता का सागर (Ocean of Purity)

परमात्मा सदा पवित्र हैं। उन पर कभी भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या या किसी भी विकार का प्रभाव नहीं पड़ता।

वे माया से पूर्णतः परे हैं। वे सम्पूर्ण पवित्रता के स्रोत हैं। इसीलिए उन्हें कहा जाता है : पतित-पावन – पतितों को पावन बनाने वाला। वे अपवित्र आत्माओं को पवित्र करने आते हैं। वे केवल पापों को क्षमा नहीं करते–

बल्कि पाप से मुक्त होने की विधि सिखाते हैं।

शांति का सागर (Ocean of Peace)

परमात्मा पूर्ण मौन हैं। वे अशांति, तनाव, चिंता और संघर्ष से परे हैं। वे परमधाम में निवास करते हैं– जो शांति का धाम है। प्रत्येक आत्मा को मूल रूप से शांति की विरासत

उन्हीं से प्राप्त होती है। शांति कोई प्राप्त करने की वस्तु नहीं– यह आत्मा का स्वधर्म है। परमात्मा हमें उसी खोई हुई शांति की याद दिलाते हैं।

प्रेम का सागर (Ocean of Love)

परमात्मा का प्रेम निःस्वार्थ, शाश्वत और सभी के लिए समान है। मानव प्रेम परिस्थितियों के अनुसार बदलता है– लेकिन दिव्य प्रेम कभी नहीं बदलता।

वे न जाति देखते हैं, न धर्म, न राष्ट्र, न धन, न पद। वे केवल आत्मा को देखते हैं। उनका प्रेम– हृदय के गहरे घावों को भर देता है, अपनापन देता है, अकेलेपन को मिटाता है, और आत्मा को पूर्ण बना देता है।

सुख का सागर (Ocean of Happiness)

सच्चा सुख धन, संपत्ति, सफलता या संबंधों से नहीं मिलता। ये सब अस्थायी हैं। परमात्मा देते हैं आध्यात्मिक सुख– जो कठिन परिस्थितियों में भी बना रहता है। वे सिखाते हैं कि कैसे भीतर से संतुष्ट और स्थिर रहा जाए।

आनंद का सागर (Ocean of Bliss)

आनंद सामान्य सुख से परे है। यह आत्म-जागृति का अनुभव है। यह आंतरिक पूर्णता, दिव्य मौन और आध्यात्मिक मस्ती का अनुभव है। परमात्मा स्वयं सदा आनंदित रहते हैं : वे कहते हैं : "निजानंद स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्!" वे कभी दुख, तनाव, अशांति या भय का अनुभव नहीं करते। वे योग के स्मृति द्वारा आत्माओं को दिव्य आनंद का अनुभव कराते हैं।

शक्ति का सागर / सर्वशक्तिमान (Ocean of Power/ World Almighty Authority) वे सम्पूर्ण विश्व के सर्वशक्तिमान अधिकारी हैं। सभी शक्तियाँ उन्हीं से आती हैं। वे हैं : शक्ति देने वाले, साहस के स्रोत, आध्यात्मिक शक्ति के दाता, प्रकृति के स्वामी, सर्वोच्च न्यायाधीश, सर्वोच्च मार्गदर्शक, सर्वोच्च रक्षक, मानवीय शक्ति अस्थायी है– दिव्य शक्ति शाश्वत है। जब आत्मा राजयोग द्वारा परमात्मा से जुड़ती है, तो वह शक्तिशाली बन जाती है। कमज़ोरी मिट जाती है। भय समाप्त हो जाता है। बंधन टूटने लगते हैं।

दुःख हरने वाले, सुख देने वाले

परमात्मा दुःख नहीं देते– वे दुःख को दूर करते हैं। दुःख आता है गलत कर्मों, देह-अभिमान और पाँच विकारों के कारण। परमात्मा आत्माओं को दुःख से मुक्त करने आते हैं। इसीलिए उन्हें कहा जाता है : दुखहर्ता – दुख को हरने वाले, और सुखकर्ता – सुख देने वाले, मुक्ति और जीवन-मुक्ति के दाता। वे प्रदान करते हैं :

मुक्ति (Mukti) — दुख, बंधन और कष्ट के चक्र से पूर्ण मुक्ति

और जीवन-मुक्ति (Jeevan-Mukti) — संसार में रहते हुए दिव्य जीवन – स्वर्ग में ऐसा जीवन होता है।

यह जीवन से भागना नहीं–

बल्कि जीवन में रहते हुए पवित्र बनना है। यह संसार त्यागना नहीं–

बल्कि उसमें रहते हुए उस पर अधिकार पाना है। यही सर्वोच्च प्राप्ति है। सभी के उद्धारक परमात्मा किसी एक धर्म, राष्ट्र या समुदाय के लिए नहीं आते। वे सम्पूर्ण विश्व के लिए आते हैं।

वे हैं:

सभी आत्माओं का बाप, सभी आत्माओं के शिक्षक, सभी आत्माओं के सद्गुरु

उनका कार्य है–

संपूर्ण विश्व का परिवर्तन।

उनका अवतरण सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए होता है। इस प्रकार, स्वरूप में वे बिंदु हैं–

लेकिन गुणों में वे सचमुच एक अनंत सागर हैं।

नाम :

परमात्मा एक है, इसलिए उनका सच्चा नाम भी एक ही है : शिव

यही उनका आदि, अनादि, शाश्वत और सर्वोच्च नाम है।

उन्हें सदाशिव कहा जाता है–अर्थात् सदा एक समान रहने वाले।

वे कारण और परिणाम से परे हैं (He is immune to any cause and effect)

वे जन्म और मृत्यु के अधीन नहीं हैं।

वे समय, क्षय, परिवर्तन और विनाश से अप्रभावित हैं।

सही ही कहा गया है:

"सर्दी, गर्मी, निन्दा, स्तुति, मान, अपमान – सब में समान।"

चाहे अपमान हो या सम्मान, चाहे निंदा हो या प्रशंसा– वे सदा एक समान रहते हैं।

वे सदा बिन्दु रूप हैं – निराकार निरंजन है – वे सदा अशरीरी हैं। वे कच्छ, मत्स्य अवतार नहीं लेते हैं। भगवान मनुष्यों की तरह जन्म नहीं लेते। वे अवतरित होते हैं, परंतु कभी गर्भ से जन्म नहीं लेते।

वे जन्म-मरण के चक्र में कभी नहीं आते।

वे सदा विदेही रहते हैं।

वे आते हैं, पर जन्म नहीं लेते।

वे परम आत्मा हैं–शाश्वत, अजन्मा और अमर। इसीलिए उन्हें कहा जाता है : अजन्मा – जो कभी जन्म नहीं लेता।

उन्हें कहा जाता है : अभोक्ता – जो सुख-दुःख के भोग से परे है

उन्हें कहा जाता है : निराकारी – जो निराकार है

उन्हें कहा जाता है : निर्वैर – जिसके भीतर किसी के प्रति वैर नहीं

उन्हें कहा जाता है : निर्गुण – जो भौतिक गुणों से परे है

उन्हें कहा जाता है : चैतन्य – जो सदा जाग्रत और सचेत है

उन्हें कहा जाता है : अव्यक्त – जो सूक्ष्म और अदृश्य है

उन्हें कहा जाता है : मालिक – सर्वोच्च स्वामी

उन्हें कहा जाता है : प्रभु – परमेश्वर

उन्हें कहा जाता है : अल्लाह, खुदा, यहोवा, ईश्वर, गॉड ये अलग-अलग भगवान नहीं हैं। ये विभिन्न धर्मों, भाषाओं और सभ्यताओं द्वारा उसी एक परम सत्ता के लिए प्रयुक्त विभिन्न नाम हैं।

परंतु उनका मूल और शाश्वत नाम है : शिव। "शिव" शब्द स्वयं गहन आध्यात्मिक अर्थ रखता है। शिव = शव + इव। शव का अर्थ है – शरीर,इव का अर्थ है – बिना। अतः

शिव का अर्थ है : "जो शरीर से परे है", "जो अशरीरी है, जो निराकार है, वही परम सत्ता है**"।**

वे हैं : **सदा सत्य – वे सत्य बाप, सत्य शिक्षक और सतगुरु बनकर, सत्य नारायण की सच्ची कथा (सत्यनारायण कथा) सुनाते हैं और सत्ययुग की स्थापना करते हैं। इसीलिए कहा जाता है : "सत्यमेव जयते"।**

वे हैं : **सदा सुंदर** – वे कभी कुरूप, वृद्ध या पतित नहीं बनते। वे सदा सुंदर रहते हैं क्योंकि पवित्रता ही वास्तविक सुंदरता है। इसीलिए कहा जाता है : "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" – सत्य ही शिव है, शिव ही सुंदर है।

वे हैं : **सदा शांत** – वे दुःख, तनाव, अशांति और संघर्ष से परे हैं। वे शांति के सागर हैं – वे सदा स्थिर और शांत रहते हैं।

वे हैं : **सदा पवित्र,** वे कभी अपवित्र नहीं होते। उन पर कभी विकार, पाप या भ्रष्टता का प्रभाव नहीं पड़ता। वे स्वयं पतितों को पावन बनाने वाले हैं। इसीलिए उन्हें कहा जाता है : **पतित-पावन**

वे हैं : **सदा चैतन्य,** सदा जीवित। वे कभी जन्म नहीं लेते, इसलिए कभी मरते भी नहीं। वे कभी अचेत नहीं होते। वे कभी मूर्छित नहीं होते। वे सदा जाग्रत, सदा सचेत और सदा जीवित हैं। जब वे आते हैं, तो सभी आत्माओं में जागृति का प्रकाश प्रज्वलित करते हैं। वे मानवता की सोई हुई चेतना को जगाते हैं।

वे हैं : **सदा आनंदस्वरुप।** वे कभी दुःख, अशांति, चिंता या तनाव का अनुभव नहीं करते। वे विश्व-नाटक को जानते हुए भी उससे न्यारे रहते हैं। वे संसार को एक शाश्वत दिव्य नाटक के रूप में देखते हैं। वे सब कुछ साक्षी भाव से देखते हैं। इसीलिए बाबा ने यह शक्तिशाली नारा दिया :

"अम्मा मरे तो भी हलवा खाना, बीवी मरे तो भी हलवा खाना।"

यह आत्म-अभिमानी स्थिति, वैराग्य और आध्यात्मिक स्थिरता सिखाता है। अर्थात् : स्थिर रहो। शांत रहो। अपने मन के मालिक बनो।

वे हैं : **सदा कल्याणकारी।** मनुष्यों में मित्र भी शत्रु बन सकता है।

परंतु परमात्मा कभी किसी से वैर नहीं रखते। वे प्रत्येक आत्मा के शाश्वत शुभचिंतक हैं। वे केवल विश्व-कल्याण के लिए आते हैं।

वे हैं : **सदा बीजरूप।** वे सदा बीज-अवस्था में रहते हैं–सूक्ष्म, अदृश्य और गुप्त। जैसे एक छोटे बीज से विशाल वृक्ष उत्पन्न होता है, पर स्वयं बीज दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार : यह विशाल संसार दिखाई देता है, पर मानव सृष्टि रूपी वृक्ष का बीज–परमात्मा–गुप्त रहता है।

वे सबसे छोटे होते हुए भी सबसे महान हैं। वे दृश्य संसार के अदृश्य रचयिता हैं। इसीलिए, यद्यपि सृष्टि सबको दिखाई देती है, पर सृष्टिकर्ता सूक्ष्म, मौन और गुप्त रहता है।

धाम (ABODE)

जैसे प्रत्येक आत्मा का एक घर होता है, उसी प्रकार परमात्मा–सर्वोच्च पिता, परम आत्मा–का भी एक शाश्वत घर है। उस घर को अनेक दिव्य नामों से जाना जाता है : **परमधाम,शांतिधाम, मुक्तिधाम, निर्वाण धाम, ब्रह्मलोक, परलोक, Sweet Silence Home**

यह पूर्ण शांति, गहन मौन और स्थिरता की भूमि है। वहाँ कोई ध्वनि नहीं है। कोई दुख नहीं है। कोई संघर्ष नहीं है। न जन्म है, न मृत्यु। न ही पदार्थ की कोई गति है। वहाँ केवल : शांति है। प्रकाश है। मौन है। यह निराकारी दुनिया है–आत्माओं का घर। भौतिक दृष्टि की पहुँच से बहुत दूर– सबसे ऊँचा क्षेत्र है : परमधाम– सर्वोच्च निवास स्थान। इसीलिए भगवान को कहा जाता है : सबसे ऊँचा(Highest-on-High) – परमधाम में निवास करते हैं।

हम आत्माएँ भी मूल रूप से परमधाम की निवासी हैं।

हम परमधाम से इस संसार में आते हैं, अपने-अपने किरदार निभाने के लिए।

इसीलिए William Shakespeare ने कहा :

“All the world's a stage

And all the men and women merely players.”

“सारी दुनिया एक रंगमंच है,

और सभी पुरुष और महिलाएँ केवल कलाकार हैं।”

काम (OCCUPATION) : ईश्वर का दिव्य कर्तव्य

परमात्मा निष्क्रिय नहीं हैं। वे केवल कहीं दूर बैठकर संसार को देखने वाले मौन दर्शक नहीं हैं। वे हैं– सर्वोच्च निर्देशक, सर्वोच्च रचयिता और महानायक हैं इस अनादि विश्व-नाटक के। उनका दिव्य कार्य अत्यंत गहन, उद्देश्यपूर्ण और सार्वभौमिक है।

अंग्रेज़ी शब्द GOD भी आध्यात्मिक रूप से उनके कार्य को दर्शाता है:

G — Generator (सृजनकर्ता)

O — Operator (पालनकर्ता)

D — Destroyer (संहारकर्ता)

यही उनके तीन प्रमुख दिव्य कर्तव्य हैं।

1. ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना (Generator) — एक साधारण मनुष्य(दादा लेखराज) के तन में अवतरित होकर उनका नाम देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा और उनके ही तन, मन, धन से स्थापना करते हैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। माउंट आबू को मुख्यालय बनाकर खास भारत के कोने-कोने में और आम दुनिया में सैकड़ों सेवाकेंद्र स्थापित करके खुद ब्रह्मा के तन में बैठ सबको राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हैं जिस पढ़ाई में चार विषय हैं : ज्ञान, योग, धारणा और सेवा।

ज्ञान माना पहले आकर स्वयंभू स्वयं का परिचय देते हैं। उसके बाद, तीनों लोकों का ज्ञान देते हैं, विश्व नाटक का ज्ञान सुनाते हैं, आत्मा का भी ज्ञान देते हैं, कर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान देकर हमें समझदार बनाते हैं।

फिर योग माना भगवान जो हैं, जैसा हैं, हम उनको याद करते हैं, परमधाम घर को भी याद करते हैं और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान को भी याद करते हैं, तो हमारा विकर्म विनाश हो जाते हैं और भगवान से सारी गुण, वैल्यूज और शक्तियां आ जाती है – सत्यता, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनंद, शक्ति, अंतर्मुखता, नम्रता, निर्भयता, धैर्यता, सहनशीलता, मधुरता और हर्षितमुखता और हम बन जाते हैं बाप समान। फिर सेवा माना हम सबको भगवान बाप का परिचय देते हैं, अंधों की लाठी बनते हैं, मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं, ज्ञानी-योगी बनाते हैं, आप समान-बाप समान बनाते

हैं और दुनिया में भगवान बाप को प्रत्यक्ष कर देते हैं तो दुनिया विनाश हो जाती है और हम चले जाते हैं परमधाम। लेकिन जो लोग इस समय की पढ़ाई से सर्वगुण संपन्न, 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म बन जाते हैं वह लोग तुरंत वहां से वापस आ जाते हैं और यहां एक धर्म, एक जाति, एक राज्य, एक भाषा, एक मत हो जाते हैं और भारत सोने की चिड़िया बन जाते हैं।

2) विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना – विष्णु है लक्ष्मी नारायण के कम्बाइंड रूप। इसलिए विष्णु को शंख-चक्र-गदा-पद्म धारी के रूप में दिखाया जाता है। जिसकी बुद्धि में सदा ज्ञान का स्वदर्शन चक्र, सुदर्शन चक्र घूमते रहते हैं, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान घूमते रहते हैं, ज्ञान की पराकाष्ठा हैं, ज्ञान की गहराई सो योग की ऊंचाई होती है, ज्ञानी-योगी बन जाते हैं तो वह गदाधारी बन जाते हैं! जिस गदा से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को दमन करते हैं और संपूर्ण निर्विकारी बन जाते हैं, अंग-अंग शीतल और खुशबूदार बन जात है तो जैसे हर अंग कमल पुष्प समान बन जाते हैं। इसलिए तो कहा जाता है कमल नयन, मुख कमल, हस्त कमल, पद्मनाभ, पादपद्म – हर कदम में पदमों की कमाई होती है, पदमापदमपति बनते है, पदमापदम भाग्यशाली बनते हैं। **ऐसे व्यक्ति ही मर्यादा पुरुषोत्तम है, मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा ना कई, बाबा मिला तो सब कुछ मिला, पाना था सो पा लिया, एक बल एक भरोसा, none but one, तुम्ही से बैठूं, तुम्हीं को देखूं, तुम्ही से पढ़ूं, तुम ही से सीखूं, तुम्ही से खेलूं, तुम्ही से खाऊं, तुम्ही से रास रचाऊं,नजर से निहाल हो जाऊं"हो जाते हैं।** ऐसे व्यक्ति ही शंख ध्वनी करने लायक बनते हैं – भूं-भूं करते हैं, टिकलू-टिकलू करते हैं, सबको बाबा का परिचय देते हैं, अंधों की लाठी बनते हैं ज्ञानी योगी बनाते हैं, आप समान वाप समान बनाते हैं, प्रजा भी बनाते हैं तो बारिश भी बनाते हैं, दास-दासी, नौकर-चाकर बनाकर कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो हो जाते हैं। ऐसे विष्णु माना लक्ष्मी नारायण के द्वारा भगवान स्वर्ग की पालना कराते हैं।

3 शंकर द्वारा नर्क का विनाश – शंकर बोल के कोई भी सत्ता है नहीं, यह भी प्रतीक है की त्रिशूल से दुनिया का विनाश हो जाता है। सबसे बड़ा शुल है विज्ञान का आविष्कार – एटम बम्ब, हाइड्रोजेन बम्ब, मिसाइल्स आदि से भारत की बाहरी दुनिया खत्म हो जाती है। लेकिन भारत में भाई-भाई लड़ेंगे, रक्त की नदियां बहेंगी, भूकंप, सुनामी, तूफान, thunder and lightning, global warming होकर भारत का विनाश हो जाता है। इसलिए तो करणकरावनहार कल्याणकारी त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है।

काल (TIME) — परमात्मा के अवतरण का समय

आध्यात्मिकता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न है– परमात्मा कब आते हैं? क्या वे हर युग में आते हैं? क्या वे बार-बार जन्म लेते हैं?

क्या वे हर पुकार पर अवतरित हो जाते हैं? इन सारे प्रश्नों का सवालों का जवाब परमात्मा स्वयं ही देते हैं : परमात्मा बार-बार नहीं आते।

वे पूरे कालचक्र में केवल एक बार आते हैं– उस समय, जब विश्व इतिहास अपने सबसे निर्णायक मोड़ पर होता है। जैसे गीता में गाया हुआ है :

"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्यूत्थानम् अधर्मस्य तादात्मानं सृजाम्यहम्।।"

उस विशेष समय को कहा जाता है– संगम युग अर्थात–पुराने और नए के मिलन का क्षण। जहाँ मिलते हैं– पुरानी दुनिया और नई दुनिया, कलियुग और सतयुग, अंधकार और प्रकाश, दुःख और सुख,

पतन और पुनर्स्थापन। यह काल छोटा है– परंतु सबसे शक्तिशाली है। यही वह क्षण है, जब स्वयं परमात्मा अवतरित होकर विश्व परिवर्तन का कार्य आरंभ करते हैं। शास्त्रीय प्रमाण (जब पूरा संसार पहुँच जाता है चरम पर– नैतिक पतन के, आध्यात्मिक अज्ञान के, हिंसा के, अपवित्रता के, अन्याय के, अशांति और दुख के... तब– परमात्मा का आगमन होता है भारत में।

परमात्मा भारत में ही आते हैं, क्यों?

परमात्मा स्वयं कहते हैं– "मैं भारत में आता हूँ।" क्योंकि भारत है–

आध्यात्मिकता की शाश्वत भूमि। यहीं– प्रथम दिव्य सभ्यता स्थापित हुई, स्वर्णिम युग का आरंभ हुआ, आदि सनातन देवी देवता धर्म प्रकट हुआ, और उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान सुरक्षित रहा। भारत केवल एक देश नहीं– यह है विश्व का आध्यात्मिक हृदय। इसीलिए गाया जाता है– "भारत भाग्य विधाता" और "मेरा भारत महान"

क्योंकि– यहीं उतरते हैं स्वयं परमपिता।

परमात्मा से हमारा सम्बन्ध क्या है?

(जब हम परमात्मा का सच्चा परिचय जान लेते हैं–

उनका रूप, गुण, नाम, धाम, काम और काल(आगमन का समय) –

तब एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है : हमारा और परमात्मा का संबंध क्या है? (उत्तर अत्यंत सरल है– परंतु उतना ही गहरा और शाश्वत भी: 👉 परमात्मा हमारा सर्वोच्च पिता है, बाप हैं।

👨‍👧‍👦 हम सबके दो बाप होते हैं – लौकिक बाप और पारलौकिक बाप

लौकिक बाप सबके अलग-अलग हैं परंतु पारलौकिक बाप सबका एक है इसलिए गाते हैं : "सबका मालिक एक है", "ईश्वर अल्लाह तेरो नाम!" "हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आपस में हम हैं भाई भाई"

❌ परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है

(GOD IS NOT OMNIPRESENT)

(दुनिया में एक बहुत प्रचलित धारणा है :👉 "परमात्मा सर्वव्यापी है – सब में है, कन-कन में हैं, घट-घट में हैं, जिसको ही देखूं तू ही तू हो, सब भगवान का ही रूप हैं, भगवान ही सबको सुख भी देते हैं, भगवान ही सबको दुख भी देते हैं, पत्ता पत्ता भी भगवान के इशारों पर ही हिलता है!..." लेकिन... यह सारी बातें गलत है

🧠 1. परमात्मा बाप है – सब कुछ नहीं यदि परमात्मा हर कण में है– तो क्या मिट्टी भी बाप हो जाएगी? पत्थर भी बाप हो जाएगा?

👉 यह तर्कसंगत नहीं है।

हम कहते हैं : 👉 सब भाई हैं , लेकिन यह नहीं कहते : 👉 सब बाप हैं

⚫ 2. जहाँ बाप है, वहाँ पाप नहीं... लेकिन आज दुनिया में क्या है? पाप ही पाप हैं। इसका मतलब सबके अंदर भगवान आप नहीं है सबके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं।

🌀 3. मानव स्वभावतः ऊपर देखता है। जब कोई पुकारता है–

"हे भगवान!" तो वह ऊपर देखता है... नीचे नहीं। क्यों?

👉 क्योंकि आत्मा जानती है– परमात्मा ऊपर है।

🔍 4. यदि परमात्मा सर्वव्यापी होता तो खोज क्यों?

लोग तीर्थ क्यों जाते हैं? प्रार्थना क्यों करते हैं? 👉 क्योंकि आत्मा जानती है– परमात्मा को पाना है। 🎨 रचयिता और रचना अलग हैं। चित्रकार चित्र से अलग होता है। लेखक पुस्तक से अलग होता है... 👉 उसी प्रकार– परमात्मा सृष्टि से अलग है।

✅ ***चार महान सत्य : 1)परमात्मा हमारा बाप है, 2) हम सबके दो बाप हैं, 3) हम सभी भाई-भाई हैं, 4) परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है***

🌀 ✨ तुम कौन हो? — तुम एक आत्मा हो

(WHO ARE YOU? — YOU ARE A SOUL)

परमात्मा को जानने के साथ एक प्रश्न है–जो हर आत्मा को स्वयं से पूछना चाहिए : मैं कौन हूँ? लोग तुरंत उत्तर देते हैं– "मैं यह व्यक्ति हूँ..." "मैं यह शरीर हूँ..." "मैं मेरा नाम हूँ..." "मैं मेरा धर्म हूँ..." लेकिन... क्या यह वास्तव में आपकी पहचान है? नहीं।

ये सब अस्थायी पहचानें हैं– ये केवल भूमिकाएँ हैं... आपका असली स्वरूप नहीं।

🧠 आप शरीर नहीं हैं : ध्यान से देखिए– हम कहते हैं : 👉 मेरा हाथ 👉 मेरी आँखें 👉 मेरा शरीर। हम कभी नहीं कहते– "मैं हाथ हूँ", "मैं शरीर हूँ"

इसका अर्थ स्पष्ट है– 👉 जो "मेरा" है, 👉 वह "मैं" नहीं हो सकता। जैसे– मेरे कपड़े मेरे हैं–लेकिन मैं कपड़े नहीं हूँ, मेरा घर मेरा है–लेकिन मैं घर नहीं हूँ। उसी प्रकार– 👉 मेरा शरीर मेरा है–पर मैं शरीर नहीं हूँ। ✨ तो मैं कौन हूँ? 👉 मैं एक आत्मा हूँ।

शरीर केवल मेरा वेश (costume) है। यह शरीर बना है– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश से। यह जड़ है... नश्वर है... जब आत्मा निकल जाती है– तो शरीर निष्प्राण हो जाता है।

इससे सिद्ध होता है : जीवन आत्मा में है–शरीर में नहीं।

🔆 आत्मा क्या है? आत्मा है– एक सूक्ष्म... चेतन... दिव्य... प्रकाश बिंदु। अत्यंत सूक्ष्म– लेकिन जीवंत ऊर्जा। दिखती नहीं...

जैसे बिजली दिखाई नहीं देती– पर उसका प्रभाव महसूस होता है... उसी प्रकार– 👉 आत्मा अदृश्य है, पर उसका अस्तित्व अटल है। ⚙️ आत्मा की तीन शक्तियाँ :

1. 🧠 मन (Mind) : सोचता है... महसूस करता है... कल्पना करता है...

2. ⚖️ बुद्धि (Intellect) : निर्णय लेती है... सही-गलत पहचानती है...

3. 🔁 संस्कार (Sanskars) : आदतें... स्वभाव...

व्यक्तित्व...

💡 आत्मा कहाँ रहती है? आत्मा शरीर में रहती है– भृकुटि के बीच

इसीलिए– तिलक, बिंदी, सिन्दूर वहीं लगाया जाता है।

🌟 परमात्मा सबसे ऊँचा है

(GOD IS THE HIGHEST-ON-HIGH)

अब जब स्पष्ट हो गया– मैं आत्मा हूँ और परमात्मा परम आत्मा है... तो अगला प्रश्न है : 👉 परमात्मा कहाँ रहते हैं? 🏠 परमात्मा का धाम परमात्मा निवास करते हैं– इस भौतिक संसार से परे, सबसे ऊँचे स्थान पर। जिसे कहा जाता है : परमधाम/ शांतिधाम/ मुक्तिधाम/ ब्रह्मलोक/ निर्वाण धाम/Sweet Silence Home

5000 वर्षों का विश्व-नाटक

(WORLD DRAMA OF 5000 YEARS)

यह संसार कोई संयोग नहीं है। यह बिना उद्देश्य के नहीं चल रहा।

यह अराजकता की कोई निरर्थक कहानी नहीं है। यह है–

👉 एक अनादि, सटीक और पूर्वनियत विश्व-नाटक एक ऐसा दिव्य नाटक– जिसमें हर आत्मा की भूमिका निश्चित है। हर जन्म... हर संबंध... हर सुख... हर दुख... 👉 सब कुछ इस महान ब्रह्मांडीय नाटक का हिस्सा है। यहाँ कुछ भी आकस्मिक नहीं है। सब कुछ समय के शाश्वत चक्र के अनुसार चलता है। ⏳ विश्व-नाटक की अवधि इस अनादि विश्व-नाटक की कुल अवधि है : 👉 5000 वर्ष

यह सम्पूर्ण चक्र बार-बार उसी प्रकार दोहराया जाता है– जैसे कोई पूर्णतः रिकॉर्ड की गई फिल्म। यह कोई अंतहीन भ्रम नहीं– 👉 यह एक सटीक आध्यात्मिक चक्र है। 🔄 चार युगों में विभाजन यह 5000 वर्षों का चक्र चार समान युगों में विभाजित है : सतयुग (स्वर्णिम युग), त्रेतायुग (रजत युग),द्वापरयुग (ताम्र युग), कलियुग (लौह युग) हर युग की अपनी विशेषता, स्थिति और आध्यात्मिक अवस्था होती है।

💥 1. **सतयुग** – धरती पर स्वर्ग यह चक्र का प्रारंभ है। इसे कहा जाता है : 👉 सतयुग/ 👉 स्वर्ग/ 👉 गोल्डन एज इस युग में : ✔ पूर्ण शांति, ✓ पूर्ण पवित्रता, ✓ पूर्ण सुख ✔ पूर्ण समृद्धि यहाँ नहीं होता : ✕ दुख ✕ रोग ✕ हिंसा ✕ संघर्ष

यहाँ होता है : 👉 एक धर्म 👉 एक राज्य 👉 एक भाषा एक राजवंश यह था– 👉 भारत – सोने की चिड़िया इस समय के शासक थे : 👉 लक्ष्मी और नारायण

🌙 2. **त्रेतायुग** – यह रजत युग है। यहाँ अभी भी सुख और पवित्रता रहती है, लेकिन पूर्णता धीरे-धीरे कम होने लगती है।

फिर भी– 👉 आज जैसा दुख नहीं होता। यह अभी भी एक दिव्य युग है।

⚙ 3. **द्वापरयुग** — देह-अभिमान की शुरुआत

यहाँ से परिवर्तन शुरू होता है। 👉 आत्म-अभिमान कम होता है

👉 देह-अभिमान बढ़ता है और यहीं से शुरू होते हैं : दुख, विभाजन, धार्मिक संघर्ष, मोह, अहंकार । इसी समय : 👉 मंदिर बनते हैं, 👉 शास्त्र बनते हैं, 👉 मूर्ति पूजा शुरू होती है, मनुष्य उस परमात्मा को खोजने लगता है जिसे वह भूल चुका है। 🕊 धर्मों का आगमन

द्वापरयुग और उसके बाद : 👉 अब्राहम – इस्लाम/यहूदी परंपरा

👉 बुद्ध – बौद्ध धर्म 👉 मसीह – ईसाई धर्म और धीरे-धीरे अनेक धर्मों की उत्पत्ति होती है। 👉 एक सत्य से अनेक शाखाएँ बन जाती हैं।

🔥 4. **कलियुग** — धरती पर नरक यह वर्तमान समय है। यह युग है : तनाव, दुःख,

युद्ध, भ्रष्टाचार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, हिंसा, रोग, भय का

अब : ✕ एक धर्म नहीं – हजारों धर्म ✕ एक राज्य नहीं – अनेक देश ✕ शांति नहीं – अशांति

इसलिए आज दुनिया लगती है–

👉 नरक समान

🙏 परमात्मा क्यों आते हैं?

जब: 👉 दुख अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है 👉 धर्म का पतन होता है 👉 अधर्म बढ़ता है 👉 मानवता पुकारती है तब–परमात्मा आते हैं । जैसा गीता में कहा गया है : "जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है– तब मैं स्वयं आता हूँ।"

✨ परमात्मा का आगमन

लगभग वर्ष 1936 में, परमात्मा शिव बाबा ने प्रवेश किया : दादा लेखराज (ब्रह्मा बाबा) के शरीर में। उन्होंने दिव्य दर्शन दिए : विष्णु, निराकार ज्योर्तिलिंगम, पुरानी दुनिया का विनाश, कृष्ण, जगन्नाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, नई दुनिया की स्थापना, 84 जन्मों का चक्र

और स्थापना की:

👉 प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

🔄 **संगम युग** – सबसे महत्वपूर्ण समय। वर्तमान समय केवल कलियुग नहीं है- यह है: संगम युग, जहाँ : पुरानी दुनिया → नई दुनिया ; नरक → स्वर्ग; देह-अभिमान → आत्म-अभिमान

यह पूरे 5000 वर्ष के चक्र का सबसे मूल्यवान समय है, क्यों?

👉 क्योंकि अभी परमात्मा स्वयं शिक्षा दे रहे हैं।

💡 यह ज्ञान क्यों आवश्यक है?

जब समझ आता है कि जीवन एक नाटक है:

👉 दुख समझ में आता है

👉 हानि अस्थायी लगती है

👉 मृत्यु एक परिवर्तन बन जाती है

तब हम पूछना बंद कर देते हैं:

"मेरे साथ ही क्यों?"

और समझने लगते हैं:

👉 "यह मेरा पार्ट है।"

🌈 अंतिम समझ

यह संसार संयोग नहीं है। यह एक सटीक, दोहराने वाला

👉 5000 वर्षों का विश्व-नाटक है।

हम कभी स्वर्ग में थे... फिर देह-अभिमान में गिरे... दुख में आए...

और अब– परमात्मा आ चुके हैं।

🔚 परिवर्तन का समय

अब फिर से: वह कलियुग → सतयुग, नरक → स्वर्ग, मनुष्य → देवता, दुःख → सुख

💥 निष्कर्ष

👉 इस नाटक को समझो

👉 जीवन अर्थपूर्ण बन जाएगा

यही शाश्वत सत्य है–

5000 वर्षों का विश्व-नाटक

अंतिम निमंत्रण

(FINAL INVITATION)

प्रिय भाईयों और बहनों,

यदि आपने यहाँ तक खुले दिल से पढ़ा है, तो यह शायद संयोग नहीं है। शायद आपकी आत्मा खोज में थी... शायद आपका अंतर्मन

इसी पहचान की प्रतीक्षा कर रहा था। क्योंकि आध्यात्मिक सत्य कभी थोपा नहीं जाता– वह स्मरण होता है। और जब सही समय आता है– आत्मा अपने पिता को पहचान लेती है।

💫 परमात्मा आ चुके हैं

यह समय का सबसे महत्वपूर्ण संदेश है : परमात्मा आ चुके हैं।

सर्वोच्च पिता, शिव बाबा, विश्व परिवर्तन के लिए अवतरित हो चुके हैं। वे आए हैं–

👉 भय उत्पन्न करने नहीं

☞ दुःख दूर करने के लिए

☞ दंड देने नहीं

☞ मुक्ति देने के लिए

☞ आत्माओं का विनाश करने नहीं

☞ नरक को स्वर्ग में बदलने के लिए

वे आए हैं हमें याद दिलाने:

☞ हम कौन हैं

☞ हमारा पिता कौन है

☞ हमारा असली घर कहाँ है

☞ हम यहाँ क्यों हैं

☞ और हमें वापस कैसे लौटना है

यह कोई मान्यता नहीं–

☞ यह एक जीवंत आध्यात्मिक सच्चाई है।

❀ आपको निमंत्रण है

लाखों लोग शांति खोजते हैं : पर सत्य को बहुत कम लोग खोजते हैं। लाखों लोग प्रार्थना करते हैं– पर सुनने के लिए ठहरते नहीं।

आज– आपको प्रेमपूर्वक निमंत्रण दिया जा रहा है:

☞ केवल विश्वास करने के लिए नहीं– अनुभव करने के लिए

☞ केवल पूजा करने के लिए नहीं– मिलने के लिए

☞ केवल पढ़ने के लिए नहीं– जानने के लिए

यह अवसर अभी उपलब्ध है।

और इसकी शुरुआत होती है–

👉 एक सरल कदम से।

📓 7-दिवसीय बेसिक कोर्स

यह आधारभूत आध्यात्मिक कोर्स

आपको सिखाता है:

👉 परमात्मा का यथार्थ परिचय

👉 5000 वर्ष के विश्व-नाटक का रहस्य

👉 आत्मा की सच्ची पहचान

👉 कर्म का सिद्धांत

👉 राजयोग ध्यान की विधि

👉 दुःख से शांति तक की यात्रा

👉 मुक्ति और जीवन-मुक्ति का मार्ग

यह केवल सिद्धांत नहीं है–

👉 यह एक व्यावहारिक आध्यात्मिक जागरण है।

और सबसे महत्वपूर्ण–

👉 यह ज्ञान स्वयं परमात्मा द्वारा दिया गया है।

🔆 परमात्मा से प्रत्यक्ष मिलन

हाँ– यह संभव है। कल्पना से नहीं... अंधविश्वास से नहीं...

बल्कि–

👉 आत्म-अभिमान से

👉 स्मृति (योग) से

👉 पवित्रता से

👉 आध्यात्मिक समझ से

लाखों भाग्यशाली आत्माओं ने परमात्मा का अनुभव किया है।

उन्होंने पाया है : शांति, उद्देश्य, अपना सच्चा घर, आप भी पा सकते हैं।

⌛ समय अत्यंत मूल्यवान है

परमात्मा बार-बार नहीं आते।

यह है–

👉 संगम युग : पूरे विश्व-नाटक का सबसे ऊँचा और शक्तिशाली समय। यह है मिलन बिंदु : पुरानी दुनिया → नई दुनिया

कलियुग → सतयुग, दुःख → सुख, भूल → पहचान

यह अवसर दुर्लभ है। समय आगे बढ़ रहा है... परिवर्तन निकट है...

फिर भी–

👉 अभी देर नहीं हुई है।

🌈 एक निर्णय–सब कुछ बदल सकता है

कभी-कभी– एक निर्णय पूरी जिंदगी बदल देता है।

एक कदम... एक प्रश्न... एक अनुभूति...

👉 शायद यह वही क्षण है।

अपने भीतर उठ रही पुकार को अनदेखा मत कीजिए।

यदि एक भी प्रश्न जागा है–

👉 उसका अनुसरण कीजिए। क्योंकि सत्य वहीं से शुरू होता है।

🙏 हमारा स्नेहपूर्ण निवेदन : आप सादर आमंत्रित हैं–

👉 अपने निकटतम

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

में आने के लिए

और भाग लेने के लिए–

👉 7-दिवसीय राजयोग कोर्स में

आइए–

👉 अनुयायी बनकर नहीं– एक जिज्ञासु बनकर

☞ अंधविश्वास लेकर नहीं– सच्चे प्रश्न लेकर

☞ धर्म के लिए नहीं– सत्य के लिए

क्योंकि–

☞ सत्य पूजा नहीं चाहता सत्य केवल समझा जाना चाहता है।

🌟 अंतिम आशीर्वाद

ईश्वर करे–

☞ अपने पिता को पहचानें

☞ आप स्वयं को पहचानें

☞ अपने शाश्वत घर को पहचानें

☞ शांति फिर से आपका स्वभाव बने

☞ सत्य आपकी शक्ति बने

☞ राजयोग आपका मार्ग बने

☞ स्वर्ग आपके भीतर शुरू हो जाए

और आपका जीवन बन जाए–

एक जीवित प्रमाण कि :

✨ परमात्मा आ चुके हैं

✨ और स्वर्ग का द्वार खुल चुका है

🏠 स्वागत है–घर वापसी में।

🕊 ॐ शांति।

*****

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

तृतीय अध्याय

बाबा की श्रीमत अनुसार योग के लिए यथार्थ चिंतन

ओम् शान्ति। प्यारे भाईओं और बहनों। आप सभी बहुत सालों से योग अभ्यास कर रहे हैं, फिर भी योग लगता नहीं है! फिर भी आपलोगों ने उम्मीद नहीं छोड़े हैं! आप जरुर सोच रहे होंगे कि हम कोशिश करते रहेंगे तो आखिर वह दिन जरुर आयगा जिस दिन हम बाबा को सही रीति याद कर सकेंगे और हम खुदको सच्चा योगी कहलायेंगे, बाबा से हमें कारेंट मिलेगा और योग में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे ! भाईओं-बहनों, बाबा कहते हैं : "हिम्मते बच्चे मददेऔ बाप"! आखिर वो दिन आया आज ...

प्यारे भाईओं-बहनों, पहले तो हमें जानना जरूरी है कि योग के बारे में बाबा की श्रीमत क्या है?

बाबा कहते हैं, "अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो।" इस में दो बातें हैं 1) अपने को आत्मा समझो और 2) मुझ बाप को याद करो।

समझ माना ज्ञान। हमें यह ज्ञान होना ही है कि "मैं आत्मा हुं – मैं शरीर नहीं हुं। ..." जैसे हमें ज्ञान है कि मैं मनुष्य हूं, मैं कोई जानवर नहीं हुं। मनुष्य और जानवर में कितना अंतर हैं! इसको जानना, समझना ज्ञान है।

याद माना किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में सोचना, चिंतन करना, उसके गुण-दोषों के बारे में चिंतन करना। जैसे हम बाबा के रूप, गुण, नाम, धाम, काम, काल, सम्बंध, प्राप्ति आदि के बारे में याद करते हैं।

हमें स्पष्ट होना चाहिए कि "समझ" और "याद" का अर्थ क्या है और इन दोनों में अंतर क्या है!

बाबा जो रोज-रोज बताते हैं "अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो", इसको समझना बहुत जरूरी है। इसका अर्थ यह थोड़े ही है : "आत्मा को भी याद करो और बाबा को भी याद करो"। बाबा तो स्पष्ट भाषा में कहते हैं : "मामेकम् याद करो, कोई

भी देहधारी को याद नहीं करो"। "देहधारी" माना "आत्मा"। अर्थात आत्मा को याद नहीं करना है, सिर्फ और सिर्फ एक बाप को ही याद करना है। क्योंकि बाप से ही वर्सा मिलता है। भाई-बहनें योग में बैठकर जो अभ्यास करते हैं : "मैं आत्मा हुं ... शरीर नहीं हुं ... यह गलत है। तो आईए, सही अर्थ में योग में बैठ बाबा को कैसे याद करें :

तो योग में बैठकर कौनसी बातों को याद करना है इसको ही हम आप को बता रहे हैं। आप इस विडियो को बार-बार देखेंगे, बातों को ध्यान से सुनेंगे और याद कर लेंगे तो योग में बैठकर यथार्थ रीति याद कर सकते हैं :

बाबा आप तो स्वयंभू हो... स्वयं आकर स्वयं का परिचय देते हो... विशेष 6 बातों से आप अपना परिचय देते हो... : रूप, गुण, नाम, धाम, काम और काल... बाबा, आपने ही तो कहा :

जैसे आप सभी बाप का परिचय देते हो तो विशेष ६ बातें सुनाते हो... जिस द्वारा बाप के परिचय को स्पष्ट करते हो... अगर इन ६ बातों को जान जाएँ तो आत्मा श्रेष्ठ पद को पा सकती है... वर्तमान और भविष्य, दोनों में सर्व प्राप्ति के अधिकारी बन सकते हैं... ऐसे बाप-दादा भी बच्चों के भाग्य को ६ बातों के आधार से देख रहे थे... ६ बातें तो अच्छी तरह से जानते हो? – अव्यक्त वाणी 4/2/1980.

रूप : बाबा... आप रूप में बिंदु हो – आप निराकार हो ... अशरीरी हो... विदेही हो ... विचित्र हो ... आपको देखा नहीं जाता है ... आपको जाना जाता है... आपके द्वारा ही आपको जाना जाता है ... आपको जान जाते हैं तो हम नास्तिक से आस्तिक बन जाते हैं ... कौरी से हीरा बनते हैं ... worth not a penny to worth a pound बन जाते हैं ... दुर्भाग्यशाली से भाग्यशाली... सौभाग्यशाली ... पदमापदम भाग्यशाली बन जाते हैं ... सुख... शांति ... खुशी से जिन्दगी भरपूर हो जाती हैं... अनाथ से सनाथ बन जाते हैं ... खुशहाल... फरिश्तों की चाल हो जाते हैं ... "मुकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरीम्" हो जाते हैं ... खुशहाल फरिश्तों की चाल हो जाती है...

कोई भी देहधारी भगवान नहीं हो सकता है...

स्वरूप :

बाबा... आप तो ज्योति स्वरूप हो... आप ज्ञान ज्योति देकर सबकी सद्गति करते हो... इसलिए तो आपको ज्योतिर्लिंगम् के रूप में माना जाता है... दुनिया में अनगिनत ज्योतिर्लिंगम् हैं ... परंतु 12 ज्योतिर्लिंगम् विश्व विख्यात हैं ... सोमनाथ... केदारनाथ... विश्वनाथ... वैद्यनाथ... मल्लिकार्जुन... रामेश्वरम्... नागेश्वर... घृष्णेश्वर... त्रियंबकेश्वर...

भीमाशंकर... ओम्कारेश्वर... महाकालेश्वर... यह सब एक ही नाम आपका नहीं है... यह सब नाम भक्तों ने दिया हैं ... बाबा... आपका प्रकृत नाम तो एक ही है ...

नाम :

बाबा, आपका तो असली नाम "शिव" है... बाबा... शिव शब्द शव और इव शब्दों का संधि है... शव माना शरीर और इव माना विहीन जिसका शरीर नहीं है वही शिव है... बाबा ... आप तो सदाशिव हो... आपका कोई परिवर्तन नहीं होते है... सर्दी-गर्मी... निन्दा-स्तुति... मान-अपमान ... सब में आप समान रहते हो ... You are immune to any cause and effect ... You are not subject to change ... You are not subject to decay ...

बाबा, आप सदा ही बिंदु हो... कच्छ-मच्छ अवतार ... 24 अवतार नहीं लेते हो ... आप निराकार निरंजन हो ... कोई भी देहधारी भगवान हो नहीं सकता है...

बाबा, आप सदा सत्य हो... सत्य बाप, सत शिक्षक और सद्गुरू बन सत्यनारायण की कथा सुनाकर आप सतयुग की स्थापना करते हो ... दुनिया तो झुठी माया झुठी काया झुठा सारा संसार है ...बाबा... आप तो झुठ खंड को सचखण्ड बनाते हो ... इसलिए तो आपका गायन है ..."सत्यमेव जयते"...

बाबा, आप सदा सुंदर हो...कृष्ण तो श्याम-सुंदर है... इसलिए तो आप "सत्यम् शिवम् सुंदरम्"हो ...

बाबा, आप सदा पवित्र माना पावन हो...आप ही पतित पावन हो... गंगा तो मैली हो गई पापीओं के पाप धोते-धोते...

बाबा, आप सदा चैतन्य हो... आप कभी भी ना मुर्दा बनते हो ना मुर्छित होते हो ... आप सदा जागती ज्योत हो... सबके ज्योत को जगाते हो... आप आते हो तो भारत में शिव जयन्ती माना सच्ची दीपावली हो जाती है ...

बाबा, आप सदा आनंद स्वरूप हो... "निजानन्द स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्". .. आपका कोई दुख... अशान्ति... तनाव नहीं होती हैं ... क्योंकि आप हर बात को साक्षीद्दष्टा होकर देखते हो ... खेल देखते हो ... नाटक देखते हो ... इसलिए आप सभी बातों में आनंद लेते हो ... आपका श्लोगन ही है : "आम्मा मरे तो भी हलुवा खाना बीबी मरे तो भी हलुवा खाना" ... आप तो सत-चित-आनन्द स्वरूप हो... सच्चिदानन्द हो ...

 बाबा... आप तो सदा कल्याणकारी हो... बाबा... इस दुनिया में आज जो दोस्त है कल वही दुश्मन बन जाते है ... लेकिन बाबा... आप तो खुदा दोस्त हो ... सदा दोस्त हो. .. सब से दूर रहनेवाला आप निर्वैर हो ... आपका किसी से भी कभी दुष्मनी नहीं हो सकता है ... तो आप सदा कल्याणकारी हो...

 बाबा... आप सदा बीजरूप माना गुप्त रहते हो... आप के बारे में कहते हैं : "सबकुछ करके खुद को छिपा लिया". .. इसलिए आपको गुमनाम कहते हैं ... सतयुग त्रेता में आप सम्पूर्ण गुप्त रहते हो ... द्वापर -कलियुग में आप भले ही भक्तों की मनोकामनाओं को पुरी करते हो ... फिर भी आप गुप्त रहते हो ... इस समय संगम पर हर कार्य का करनकरावनहार आप ही हो ... फिर भी आप गुप्त हो ... बाबा ... बाबा ... आप ब्रह्मा तन में भी गुप्त हो... लेकिन बाबा... इस समय आप आये ही हो प्रत्यक्ष होने ने के लिए ... आपकी प्रत्यक्षता माना सारी आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलना... इसलिए बाबा... आपको प्रत्यक्ष करना हम बच्चों का फर्ज है...

धाम :

बाबा, आप तो परमधाम ... ब्रह्म लोक ... परलोक ... मुक्तिधाम ... निर्वाणधाम ... शान्ति धाम ... Sweet Silence Home ...के वासी हो... यहां ही तो आप

"Twinkle, twinkle little star

How I wonder what you are!

Up above the world so high

Like a diamond in the sky!"

काम :

बाबा...कहते हैं "ऊंचा तेरा नाम ... ऊंचा तेरा धाम... ऊंचा तेरा काम... आपका तीन काम हैं : ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना... विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना... और शंकर द्वारा नर्क का विनाश कराते हो...

ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना : बाबा... दादा लेखराज के तन में अवतरित होकर आप उनका नाम देते हो प्रजापिता ब्रह्मा ... और उनके ही तन-मन-धन से स्थापना करते हो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ... माउंट आबु को मुख्यालय बनाकर ... खास भारत के कोने-कोने में और आम दुनिया में सैकड़ों सेवाकेन्द्र स्थापित करके

खुद ब्रह्मा तन में बैठकर... आप सबको राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हो ... जिस पढ़ाई में चार विषय हैं : ज्ञान... योग... धारणा और सेवा ...

ज्ञान : बाबा... ज्ञान माना आप पहले पहले अपना परिचय देते हो... सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देते हो ... तीनों लोकों का ज्ञान देते हो ... आत्मा का ज्ञान देते हो ... कर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान देते हो... तो हम समझदार बन जाते हैं ...

योग : बाबा ... आप जो हैं... जैसा हैं ... हम आप को याद करते हैं... परमधाम घर को याद करते हैं ... और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को भी याद करते हैं ...

धारणा : तो आप से हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा को प्राप्त करते हैं" ... अर्थात हमारा विकर्म विनाश होते है और आप से सारे गुण और शक्तियों कों – सत्यता... पवित्रता ... शान्ति... प्रेम ... सुख... आनंद... शक्ति ... अंतर्मुखता... नम्रता ... निर्भयता... धैर्यता... सहनशीलता... मधूरता और हर्षितमुखता – प्राप्त कर हम बाप समान बन जाते हैं ...

सेवा : और सेवा माना हम सबको बाबा का परिचय देते हैं ... अंधों की लाठी बनते हैं ... सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं ... ज्ञानी-योगी बनाते हैं ... आप समान... बाप समान बनाते हैं ... और आपको प्रत्यक्ष करते हैं ... तो

ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना : बाबा... दादा लेखराज के तन में अवतरित होकर आप उनका नाम देते हो प्रजापिता ब्रह्मा ... और उनके ही तन-मन-धन से स्थापना करते हो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ... माउंट आबु को मुख्यालय बनाकर ... खास भारत के कोने-कोने में और आम दुनिया में सैकड़ों सेवाकेन्द्र स्थापित करके खुद ब्रह्मा तन में बैठकर... आप सबको राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हो ... जिस पढ़ाई में चार विषय हैं : ज्ञान... योग... धारणा और सेवा ...

ज्ञान : बाबा... ज्ञान माना आप पहले पहले अपना परिचय देते हो... सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देते हो ... तीनों लोकों का ज्ञान देते हो ... आत्मा का ज्ञान देते हो ... कर्म-अकर्म-विकर्म का ज्ञान देते हो... तो हम समझदार बन जाते हैं ...

योग : बाबा ... आप जो हैं... जैसा हैं ... हम आप को याद करते हैं... परमधाम घर को याद करते हैं ... और सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को भी याद करते हैं ...

धारणा : तो आप से हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा को प्राप्त करते हैं" ... अर्थात हमारा विकर्म विनाश होते है और आप से सारे गुण और शक्तियों कों — सत्यता... पवित्रता ... शान्ति... प्रेम ... सुख... आनंद... शक्ति ... अंतर्मुखता... नम्रता ... निर्भयता...

धैर्यता... सहनशीलता... मधूरता और हर्षितमुखता — प्राप्त कर हम बाप समान बन जाते हैं ...

सेवा : और सेवा माना हम सबको बाबा का परिचय देते हैं ... अंधों की लाठी बनते हैं ... सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं ... ज्ञानी-योगी बनाते हैं ... आप समान... बाप समान बनाते हैं ... और आपको प्रत्यक्ष करते हैं ... तो

तो दुनिया का विनाश हो जाता है ... फिर हम सब आत्माएं परमधाम घर चले जाते हैं ... लेकिन... बाबा ... जो लोग इस समय के पुरुषार्थ से सर्वगुण सम्पन्न... 16 कला सम्पूर्ण... सम्पूर्ण निर्विकारी... मर्यादा पुरुषोत्तम ... अहिंसा परमो धर्म बनते हैं ... तुरंत वापस आते हैं ... और यहां एक धर्म ... एक जाति ... एक भाषा ... एक राज्य ... एक मत ...हो जाता है ... भारत सोने की चिड़िया बन जाता है ... यह है ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना...

विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना : बाबा, विष्णु माना लक्ष्मी और नारायण का कम्बाईंड रूप है ... इसलिए विष्णु का चार हाथ दिखाते हैं ... चार अलंकार दिखाते हैं ... शंख... चक्र ... गदा... पद्म ...

जिसकी बुद्धि में सदा ज्ञान का स्वदर्शन चक्र घूमता है... सुदर्शन चक्र घूमता है ... सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान घुमता ही रहता है ... ज्ञान की पराकाष्ठा है ... ज्ञान की गहराई सो योग की उंचाई है ... ऐसे ज्ञानी-योगी गदाधारी बन जाता है ... इस ज्ञान-योग का गदा से काम ... क्रोध ... लोभ... मोह और अहंकार को दमन करते हैं ... सम्पूर्ण निर्विकारी बन जाता है ... हंगामा शीतल और खुशबूदार बन जाता है इसलिए तो ... कमल पुष्प समान न्यारा-प्यारा बनते है ... इसलिए तो बोलते हैं कमल नेत्र ... मुख कमल ... कमल हस्त ...पद्मनाभ ... पादपद्म ...ऐसा व्यक्ति पदमापदम भाग्यशाली बनते हैं ... पदमापदमपति बनते है ... हर कदम में पदमों की कमाई होती रहती है ... ऐसे व्यक्ति को ही मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है ...

मेरा तो एक शिव बाबा दुसरा ना कोई... बाबा मिला माना सबकुछ मिला ... पाना था सो पा लिया ... एक बल एक भरोसा ... none but one ... तुम्हीं से बैठुं ... तुम्हीं से सुनुं ... तुम ही से पढ़ूं ...

तुम ही से सीखूं ... तुम्हीं से बातें करूं ... तुम्हीं से खाऊं ... तुम्हीं से रास रचाऊं ... ऐसे बनने वाला व्यक्ति ही शंखध्वनि करने लायक है ... भूं-भूं करते है ... टिकलु-टिकलु करते करते है... सबको बाबा का परिचय देते है ... अंधों की लाठी बनते है ... मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते है... ज्ञानी योगी बनाते हैं ... आप समान बाप समान बनाते है ... प्रजा भी बनाते है तो वारिस भी बनाते है ... दास-दासी नौकर-चाकर बनाकर कम

बोलो धीरे ब़ोलो मीठा बोलो हो जाते है ... बाबा ... ऐसे विष्णु अर्थात लक्ष्मीनारायण के द्वारा आप स्वर्ग की पालना कराते हो...

शंकर द्वारा नर्क का विनाश : बाबा... शंकर तो एक प्रतीक है ... त्रिशुल द्वारा विनाश होते है ... सबसे बड़ा शुल है विज्ञान का आविष्कार ... एटम बोम्ब ... हाईड्रोजन बोम्ब ... मिसाइल ... आदि से दुनिया खलाश हो जाती है ... परंतु भारत में भाई-भाई लड़ेंगे ... रक्त की नदीयां बहेगी ... भूकम्प ... सुनामी ... तुफान ... thunder and lightning ... global warming होकर विनाश होंगे ...

बाबा, आपके ये तीन महान दिव्य कर्तव्य होने के कारण आपके बहुत नाम तीन अक्षरों में पाया जाता है ... त्रिमूर्ति... त्रिनेत्री ... श्रीनाथ ... God... ईश्वर ... अल्लाह ... खुदाह ... जेहोभा... स्वयंभू ... परभू ... ओंकार... अउम् ...खिवैया ... मालिक ...निर्वैर ... निर्गुण ... अजन्मा ... अभोक्ता ... अव्यक्त ... चैतन्य ...

काल : बाबा, गीता में आपने ही तो कहा था :

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्यूत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।"

जब धर्म की ग्लानि होती है ... अधर्म होते है ... भ्रष्टाचार ... अनाचार ... हाहाकार ... सारी दुनिया में लड़ाई-झगड़ा होती हैं ... तब आप भारत में ही आते हो... इसलिए तो हम गाते हैं "भारत भाग्य विधाता" ... "मेरा भारत महान"... क्योंकि महान ते महान मेहमान आप भगवान मेरे भारत में आते हो ... माउंट आबु में आते हो ... हम दुनिया के लाखों व्यक्ति माउंट आबु के डायमंड जुबिली हाल में बैठ स्वयम् भगवान से आमने-सामने मिलन मनाया हैं ...

गुण : बाबा ... आप रूप में बिंदु हो ... लेकिन गुणों में सिंधु माना सागर हो ... आप ज्ञान का सागर हो ...पवित्रता का सागर हो ... शांति का सागर हो ... प्रेम का सागर हो ... सुख का सागर हो ... आनंद का सागर हो ... सर्वशक्तिमान हो ...सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञाता हो ... दुखहर्ता ... सुखकर्ता ... पतित-पावन हो... मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता हो ... सर्व का सद्गति दाता हो ...

बाबा ... कहते हैं : "सागर को सियाही बनाओ ... जंगल को कलम बनाओ ... और धरती को कागज बनाकर लिखते जाओ... फिर भी कम परेगा" ...

सम्बंध : बाबा ... आप हम सबके बाप हो ... सबका दो बाप हैं ... लौकिक वा हद के बाप से हद का वर्सा – रोटी- कपड़ा-मकान मिलता हैं ... और आप पारलौकिक वा

बेहद के बाप से बेहद का वर्सा –सुख... शांति ... और खुशी... अथवा मुक्ति और जीवन-मुक्ति मिलता हैं ... लौकिक बाप सबका अलग अलग हैं ... लेकिन पारलौकिक बाप सबका एक है... इसलिए तो गाते हैं "सबका मालिक एक" ... "ईश्वर... अल्लाह ...तेरो नाम"... "हिंदू... मुस्लिम... सिक्ख... ईसाई आपस में हम हैं भाई-भाई"...

बाबा सर्वव्यापी नहीं है : बाबा दुनिया कहती हैं आप सर्वव्यापी हो... सब में हो ... सबके अंदर हो ... कण-कण में हो... घट-घट में हो ... जिसको ही देखूं तू ही तू हो...सब आप का ही रूप हैं...आप ही सबको सुख भी देते हो तो दुख भी देते हो... पत्ता-पत्ता भी आप के इशारे पर हिलता हैं ...

बाबा, यह सारी बातें गलत हैं!... insulting है ... defamatory है ...

बाबा ... आप सर्वव्यापी होने से मिट्टी ... पानी, वायु, अग्नि, आकाश, कीड़े-मकोड़े, जानवर, नदी-नाला, जंगल-पहाड़ सब मेरा बाप हो जायेगा. .. बाबा, यह तो हो नहीं सकता... ऐसे कि सारे मनुष्य भी मेरे बाप हो नहीं सकता. .. हम तो आपस में भाई-भाई हैं ... बाप-बाप नहीं हैं ... इसलिए तो अंग्रेजी में कहते हैं : “Universal Brotherhood” ... “Universally Fatherhood” तो हो नहीं सकता ...

बाबा... कहते हैं ... "जहां बाप है वहां पाप नहीं होता ... जहां पाप है वहां बाप नहीं होता"...परंतु आज तो सब में पाप ही पाप होते हैं ... क्योंकि सबके अंदर आप भगवान बाप नहीं हो... सबके अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं ... इसलिए तो सब में पाप ही पाप होते हैं...

कोई कहते हैं "हे भगवान!" कोई कहते हैं "हे अल्लाह!" कोई कहते हैं "O God!", कोई कहते हैं “बाहेगुरू!” ... सभी तो ऊपर ही इशारा करते हैं... तो बाबा ... आप ऊपर वाला है ... ऊपर वाला तो ऊपर ही रहेगा!... कण-कण में ... घट-घट में कैसे रहेगा!...

बाबा, इतने कड़ोरों मनुष्यों को आप सुख-दुःख कैसे दे सकते हो! ... मनुष्य तो अपने कर्मों के अनुसार सुख-दुःख भोगते हैं ... इस में आपका तो कोई लेना-देना है ही नहीं ...

बाबा, पत्ता-पत्ता भी आप के इशारे पर कैसे हिलेंगे!... पत्ते तो हवा से हिलते हैं ...

बाबा, आप ने जो चार बातें बताई हैं कि

1)आप मेरा बाप है,

2) मेरा दो बाप हैं,

3) हम सब आपस में भाई-भाई हैं ओर

4) आप सर्वव्यापी नहीं हैं।

बाबा ... मैंने दिल से ... अंत:करन से इन चारों बातों को मान लिया ...

बाबा ... आप ने ही तो बोला हैं : "जो भी व्यक्ति इन चारों बातों को जिन्दगी में एक बार भी दिल से मान लेते है वह व्यक्ति :

1) महान है ... 2) भाग्यशाली है और ... 3) स्वर्ग के लायक है ...

तो बाबा, मैं भी 1) महान हुं ... 2) भाग्यशाली हुं और ... 3) स्वर्ग के लायक हुं। ...

बाबा परमधाम में रहते हैं

बाबा ... आप परमपिता परमात्मा परमधाम में ही रहते हो ... आप कण-कण में ... घट-घट में ... सर्वव्यापी कैसे हो सकते हो? ... परमधाम हमारा भी घर है...लेकिन हम आत्माएं परमधाम से इस धरती पर आकर पांच तत्वों का शरीर रूपी वस्त्र पहनकर पार्ट बजा रहे हैं... अंग्रेज नाटककार William Shakespeare ने बोला है :

"All the world's a stage

And all the men and women merely players."

विश्व एक रंगमंच है

हम सब नारी-पुरुष सिर्फ और सिर्फ पार्टधारी हैं।

विश्व नाटक ... सृष्टि नाटक ... 5000 वर्ष के हैं

विश्व नाटक ... सृष्टि नाटक ... सृष्टि-चक्र ... स्वादर्शन चक्र भाग्य चक्र ... 5000 वर्ष के हैं...जिसमें चार युग होते हैं ... सतयुग ... त्रेतायुग ... द्वापरयुग और कलियुग...अब हम सब कलियुग में हैं... अज्ञान अंधकार में हैं...

बाबा, आज से 5000 वर्ष पहले आप भारत में आए थे... अनेक अधर्मों का विनाश कर एक सत्य धर्म की स्थापना की थी... इसका नाम है आदि सनातन देवी देवता धर्म ... ना कि हिंदू धर्म... उस समय एक धर्म... एक जाति ... एक भाषा ... एक मत था ... भारत सोने की चिड़िया था...

द्वापर में इब्राहिम आया और स्थापना की इस्लाम धर्म...

फिर बुद्ध आके स्थापना की बौद्ध धर्म...

फिर ईशा आया और स्थापना की ईसाई धर्म...

ऐसे बढ़ते-बढ़ते आज के समय में दुनिया में 4200 से अधिक धर्म हो गए हैं!... अभी अनेक देश ... अनेक धर्म ... अनेक जाति ... अनेक भाषा ... अनेक मतें हैं ... इसलिए दुनिया अभी कुम्भीपाक नर्क है ... जाहन्नुम है ... दु:ख ही दु:ख है...

कहते हैं ना दुख में सिमरन सब करें सुख में करे ना कोई... बाबा! आज से 100 साल पहले दो विश्व युद्ध हुए थे...उसमें 9 करोड़ मनुष्य मारे गए थे...32 साल आम दुनिया और खास एशिया यूरोप और आफ्रीका महादेशों में लड़ाई ही लड़ाई चल रही थी...उस समय मनुष्य जाति कितना ना दु:खी थे ... उसी बीच 1936 में सिंधु प्रदेश हैदराबाद के दादा लेखराज को आपने बहुत साक्षात्कार कराया :

चतुर्भुज विष्णु ... निराकार ज्योतिर्लिंगम् ... महाविनाश ... अल्लिफ को अल्लाह मिला ... बे को मिली झुठी बादशाही ... आई तार अल्लिफ को ... हुआ रेल का राही... मृत्यु दशा ... अहम् चतुर्भुज: तत् त्वम् ... अहम् श्रीकृष्ण: तत् त्वम् ... अहम् जगन्नाथ: तत् त्वम् ... अहम् बद्रीनाथ: तत् त्वम् ... अहम् केदारनाथ: अहं त्वां दिव्य प्राप्तिं ददामि... निजानन्द स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम् ... ज्ञान स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम् ... प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम् ... एक लाईट थी एक माईट थी ... एक सुन्दर दुनिया थी... उपर सितारों की दुनिया से आत्माएं आते थे ... कोई राजकुमार बन जाते थे तो कोई राजकुमारी बन जाती थी ... फिर वह लाइट-माइट ने दादा को बोला यह ऐसी दुनिया तुम्हें बनानी है ... तुम तन-मन-धन से समर्पित हो जाओ ...

दादा झाटकू समर्पित हो गया ... बाबा, आप ने दादा के तन में अवतरित होकर दादा का नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा... और उनके ही तन-मन-धन से स्थापना की प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय...

बाबा, फिर माउंट आबु को आप ने संस्था का मुख्यालय बनाकर सेवा सुरु कर दी ... बाबा, आज तो खास भारत के कोने-कोने में ... और दुनिया के 150 देशों में सैकड़ों सेवाकेन्द्र स्थापित हुए हैं ... बाबा, इसी बीच आप ने मुझे भी चुना ... अपना बनाया ...

बाबा, अब तो आप मेरा बाप भी हो... टीचर भी हो ...सद्गुरु भी हो... मां भी हो ...बच्चा भी हो...दोस्त भी हो ... साजन भी हो...

मेरा तो एक शिव बाबा, दूसरा ना कोई... ओम शांति।

***ऐसे शांति में बैठ, प्यार से बाबा को याद करना ही "मन्मनाभव-मध्याजीभव”, “बाप और वर्से को याद करो”, “ बाप को याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ”, “बाप को भी याद करो, घर को भी याद करो, ड्रामा को भी याद करो”, "मामेकम् याद करो",

"सिर्फ मुझे याद करो" है, यही है बाबा को याद करने का सहज तरीका, यही ह सहज राजयोग। इस कमेंट्री को याद रखने से आप कम से कम एक घंटा/ डेढ़ घंटा/ दो घंटे तक बाबा की याद में बैठ सकत है।

मन्तव्य :

ओम् शांति। हमने अपने यूट्यूब चैनल "बाबा की प्रत्यक्षता" में "बाबा की श्रीमद् अनुसार योग के लिए यथार्थ चिंतन :-योग क्या है" वीडियो डाला था। बहुत शुभाकांक्षी और जिज्ञासुओं ने उसे स्वागत भी किया है और स्वीकार भी किया हैं। यह बहुत अच्छी बात है। क्योंकि बाबा की सारी मुरलीओं को बहुत बार गहराई से अध्ययन करके ही इस विडियो को प्रस्तुत किया गया है। विडियो बनाने का हमारा मकसद यह नहीं है कि हम सोसल मिडिया द्वारा प्रख्यात हो जायें। हमें तो बाबा को प्रख्यात करना है, बाबा को प्रत्यक्ष करना है। इसके लिए हमारे भाई-बहनों को ज्ञानी-य़ोगी-सेवाधारी बनाना बहुत जरूरी है; बाबा का परिचय और उनकी याद को यथार्थ और सहज बनाना है।

दरअसल योग बहुत ही सहज है। और यह सहज राजयोग है। सहज तब हो सकता है जब हम राज को समझेंगे। पहला राज तो यह है कि यह कोई हठयोग नहीं है जहां शरीर के साथ कोई भी लेना-देना हो। शरीर जैसा भी हो भले स्वस्थ हो या बिमार हो,भले शान्ति में बैठे रहे या कर्म में व्यस्त हो – किसी भी स्थिति में भी योग में रहा जा सकता है। मुख्य बात है राज को समझना।

लेकिन देखा जाता है कि बिगर राज को समझें भाई-बहनें योग में बैठते हैं, तो फिर सहज योग कठिन हो जाता है! इसीलिए स्वयं भगवान ने बोला हैं : "यह ज्ञान-मार्ग है, यहां बहुत समझ चाहिए!" इसको बुद्धि-योग भी कहा जाता है। बाबा ने कहा, "नॉलेज देखो कितनी ऊंची है। इसे समझने में भी बहुत बड़ी बुद्धि चाहिए, विशाल बुद्धि चाहिए"। बुद्धिमान ही किसी राज को सहज समझ जाते हैं। नहीं तो भाई-बहनें सालों-साल ज्ञान में चलते हैं, सुबह-शाम योग में बैठते हैं, योग भट्ठी भी करते हैं, औरों को योग सिखाते भी हैं ; परंतु यथार्थ योग क्या है यह बात को नहीं समझने के कारण योग में अनुभूति होती नहीं है। सच्चे योगी को तो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, जैसे मम्मा और बाबा! अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करनेवाले योगी के लिए तो "एक बाबा दुसरा ना कोई!" है। ऐसे ज्ञानी-योगी कभी भी नहीं कहेंगे "योग लगता नहीं है", "कोई भी ज्ञान को सुनते नहीं है!" वह सदा याद और सेवा के बेलेंस में रहकर उन्नति को पाते रहेते है।

बाबा कहते हैं : "अपने को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो।" इस बात को बिरला ही समझते हैं! कोई भी व्यक्ति किसी भी विषय में समझदार बनते है तो वह

उस विषय में पक्का बनते है। इसलिए ब्रह्मा बाबा ने शुरू-शुरू में ही आत्मा का पाठ को पक्का किया था : “मैं आत्मा हूँ, यशोदा आत्मा है, राधिका आत्मा है ...” इसको ही भाई-बहनों ने समझ लिया हैं कि शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को पहले-पहले आत्मा का पाठ पक्का कराया था। ऐसे नहीं योग में बैठकर बाबा सोचते थे “मैं आत्मा हूं, यशोदा आत्मा है, राधिका आत्मा है।” यह आत्मा का जो पाठ है वह योग में बैठकर अभ्यास करना नहीं है । देखा जाता है बहुत भाई-बहनें योग में बैठकर कान में एयरफोन लगाकर कोई कमेंट्री, या तो गाना या म्यूजिक सुनते रहते हैं। यह योग थोड़ेही है । बाबा ने तो स्पष्ट बताया हैं, “योग अक्षर को निकाल दो, यह भक्तिमार्ग के, शास्त्र के अक्षर है। राजयोग में योग माना “सिर्फ बाबा को याद करना है”।

मैं आत्मा हूं, मैं आत्मा हूं” इसको प्रेक्टिस करने के लिए तो बहुत समय है – चलते-फिरते, खाते-पीते, काम-काज करते भी हम प्रेक्टिस कर सकते हैं, लिख भी सकते हैं। परंतु, एकान्त में बैठकर योग करने के लिए सिर्फ सुबह और शाम को ही समय मिलता है। उसमें से अमृतबेले का योग, बाबा कहते हैं “विशेष है, क्योंकि अमृतबेला योगेश्वर बाबा स्वयं आते हैं हम बच्चों से मिलने, हम बच्चों को सकाश देने”। तो सोचिए वह समय कितनी कीमती है! उस समय भी हम बाबा को याद नहीं करके आत्मा को याद करेंगे तो हमारे जन्म-जन्म का विकर्म कैसे विनाश होंगे? सायद इसीलिए आज कल “आत्मा पहला पाठ है” रवैया चल रहा है। आज कल भाई-बहनें कहते हैं : “ज्ञान माना आत्मा-परमात्मा-ड्रामा”! इससे भी बढ़ कर सिखाया जाता है : “A for atma, B for Baba, C for connection and D for Drama.” यही बात को बाबा ने कहा : “बच्चे अपना तिक-तिक करते हैं।” इसको ही कहते हैं “Intellectualisation/ hypothesization of the easy knowledge and easy yoga”.

आज पहले आत्मा का पाठ पक्का कराया जाता है, लेकिन बाबा तो कहते हैं “पहले-पहले अल्फ (बाप)का पाठ पक्का कराओ!” आज तो बाबा का परिचय देने का कोई भी रवैया ही नहीं रहा! ना कोई भाई-बहनें किसी जिज्ञासुओं को बाबा का परिचय देते हैं, ना कोई सेवाकेन्द्र के कोई भी प्रोग्राम में बाबा का परिचय देते हैं। तो फिर जिज्ञासु या बाबा के बच्चे कैसे ज्ञानी-योगी-सेवाधारी बनेंगे?

इसीलिए “प्रोजेक्ट : बाबा की प्रत्यक्षता” के जरिए बाबा के बच्चों को, हमारे प्यारे दैवी भाई-बहनों को हम बाबा की श्रीमत को याद दिलाते हुए निवेदन करते है कि अब से हम सभी बाबा की श्रीमत अनुसार ज्ञान, योग,धारणा और सेवा इन चारों विषयों को प्रेक्टिस करें!

आप देखिए, बाबा जो कहते हैं "बाबा को याद करना बहुत सहज है", यह विडिय को ध्यानपूर्वक देखने/सुनने वालों को यह बात महसूस होगा!

उपरोक्त योग की कमेंट्री को आप सभी बहुत ध्यान से बार-बार सुनेंगे तो आप अति शीघ्र सहज और यथार्थ योगी बनेंगे।

प्यारे भाइयों और बहनों, इस विडियो के साथ-साथ "बाबा का यथार्थ परिचय" को भी सही रीति सुनेंगे तो आप औरों को भी बाबा का परिचय दे सकते हैं। बाबा कहते हैं "याद और सेवा का बेलेंस रखने से माया पर सहज ही विजय प्राप्त कर सकते हैं" और आप खुद को ज्ञानी-योगी-सेवाधारी कहला सकेंगे।

धन्यवाद । ओम् शांति।

*****

भगवान आये हैं, अल्लाह आये हैं, GOD आये हैं...

चतुर्थ अध्याय

उपसंहार
आने वाली दुनिया कैसी होगी : स्वर्ग का नक्शा

स्वर्ग के रचियता शिव बाबा बोले -

आज बाप-दादा कौन-सी सभा को देख रहे हैं? यह है साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ सो भविष्य में शहज़ादे-शहज़ादियों की सभा। सच्चे साहब के बच्चे सब साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ हैं। यह नशा सदैव रहता है? शहज़ादे वा शहज़ादियों के जीवन से यह जीवन पदमगुणा श्रेष्ठ है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें अपनी श्रेष्ठता को जानते हुए निरन्तर उसी खुमारी में रहते हो? आज वतन में बाप और दादा दोनों की रूह-रूहान चल रही थी कि साहबजादे और साहबज़ादियों का महत्व कितना बड़ा है। भविष्य जीवन के सर्व संस्कार इस जीवन से ही आरम्भ होते हैं। भविष्य में राज्यवंश होने के कारण, राज्य अधिकारी होने के कारण सदा सर्व-सम्पत्ति से सम्पन्न हर वस्तु में मालामाल, सदा राजाई की रॉयल्टी में हर जन्म बितायेंगे। सर्व प्राप्तियाँ हरेक के जीवन में चारों ओर सेवा प्रति चक्कर लगाती रहेंगी। आप लोगों को प्राप्ति की इच्छा नहीं होगी लेकिन सर्व प्राप्तियाँ इच्छुक होंगी कि मेरे मालिक मुझे कार्य में लगायें। चारों और वैभवों की खानें भरपूर होंगी। हर वैभव अपना-अपना सुख देने के लिए सदा एवररेडी होंगे। सदा खुशी की शहनाईयाँ ऑटोमेटिकली बजती रहेंगी। बजाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। आपकी रचना वनस्पति अपने विश्व-पति के आगे पत्तों के हिलने से वैराइटी प्रकार के साज़ बजायेगी। वृक्ष के पत्तों का झूलना, हिलना भिन्न-भिन्न प्रकार के नैचुरल साज़ होंगे। जैसे आजकल अनेक प्रकार के साज़ आर्टीफिशल बनाते हैं वैसे पंछियों की बोली वैराइटी साज़ होगी। चेतन खिलौने के समान अनेक प्रकार के खेल आपको दिखायेंगे। जैसे आजकल यहाँ मनुष्य भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियाँ सीखते हैं मनोरंजन के लिए, वैसे वहाँ के पंछी भिन्न-भिन्न सुन्दर आवाज़ों से आपके इशारे पर मनोरंजन करेंगे। इसी प्रकार यह फल और फूल होंगे। फल ऐसी वैराइटी रसना वाले होंगे जैसे यहाँ अलग-

अलग नमक, मीठा अथवा मसाला आदि डालकर रसना करते हो, वैसे वहाँ नैचुरल फल भिन्न-भिन्न रसना के होंगे। यह शुगरमिल वगैरह नहीं होंगी लेकिन शुगरफल होगा। जैसी टेस्ट चाहिए वैसी नैचुरल फल से बना सकते हो। यह पत्तों की सब्जियाँ नहीं होगी लेकिन फल और फूल की सब्जियाँ होंगी। फूलों और फलों की सब्जियाँ बनायेंगे। दूध की तो नदियाँ होंगी। अच्छा अभी पियेंगे क्या? नैचुरल रस के फल अलग होंगे, खाने के अलग, पीने के अलग होंगे। मेहनत करके रस निकालना नहीं पड़ेगा। हरेक फल इतना भरपूर होगा जैसे अभी नारियल का पानी पीते हो ना। ऐसे फल उठाया, ज़रा-सा दबाया और रस पी लिया। नहाने के लिए पानी होगा, वो भी जैसे आजकल का गंगाजल जिसका पहाड़ों की जड़ी-बूटियों के कारण विशेष महत्व हैं, कीड़े नहीं पड़ते हैं, इसलिए पावन गाया जाता है। वैसे वहाँ पहाड़ों पर ऐसे खुशबू की जड़ी-बूटियों के समान बूटियाँ होंगी तो वहाँ से जल आने के कारण नैचुरल खुशबू वाला होगा। इत्र डालेंगे नहीं लेकिन नैचुरल पहाड़ों से क्रास करते हुए ऐसी खुशबू की बूटियाँ होंगी जो सुन्दर खुशबू वाला जल होगा।

वहाँ अमृतवेले टेप नहीं उठायेंगे। नैचुरल पंछियों की आवाज़ ही साज़ होगी, जिस पर आप लोग उठेंगे। उठने का टाइम सवेरे ही होगा। लेकिन वहाँ थके हुए नहीं होंगे। क्योंकि जब चेतन देवताएँ जागें तब भक्ति में भी भक्त सवेरे उठकर जगाते हैं। भक्ति का महत्व भी अमृतवेले का है। जागेंगे सवेरे ही, लेकिन सदा ही जैसे जागती ज्योति हैं। कोई हार्ड वर्क हैं नहीं। न हार्ड वर्क है न बुद्धि का वर्क है, न कोई बोझ है। इसलिए जागना और सोना समान है। जैसे अभी सोचते हो न कि सवेरे उठना पड़ेगा, वहाँ यह संकल्प ही नहीं। अच्छा – पढ़ेंगे क्या? कि पढ़ने से छूटना चाहते हो? वहाँ की पढ़ाई भी एक खेल है। खेल-खेल में पढ़ेंगे। अपनी राजधानी की नालेज तो रखेंगे ना। तो राजधानी की नालेज की पढ़ाई है। लेकिन मुख्य सबजेक्ट वहाँ की ड्राइंग है। छोटा, बड़ा सब आर्टिस्ट होंगे, चित्रकार होंगे। साज़, चित्रकार और खेल। साज़ अर्थात गायन विद्या के संगीत गायेंगे, खेलेंगे, इसी में पढ़ाई पढ़ेंगे। वहाँ की हिस्ट्री भी संगीत और कविताओं में होगी, ऐसी सीधी-सीधी बोर करने वाली नहीं होगी। रास भी एक खेल है ना। नाटक भी करेंगे, बाकी सिनेमा नहीं होंगे। नाटक होगा। नाटक हँसी के मनोरंजन के होंगे। नाटकशालायें काफी होंगी। वहाँ के महलों के अन्दर भी विमानों की लाइन लगी होगी और विमान भी चलाने के बहुत सहज होंगे। ऍटामिक एनर्जी के आधार पर सब काम चलेगा। यह आप लोगों के कारण लास्ट इन्वेन्शन निकली है।

करेन्सी में अशर्फियाँ होंगी। लेकिन आजकल जैसी नहीं होगी। रूप-रेखा परिवर्तित होगी। डिज़ाइन और अच्छी-अच्छी होंगी। निमित्त मात्र लेन-देन होंगी। जैसे यहाँ मधुबन में परिवार होते हुए भी चार्ज वाले अलग-अलग बनाये हुए हैं ना। अलग-अलग

डिपार्टमेंट बनाए हुए हैं। परिवार होते भी चार्ज वाले से लेते हो ना। एक देता है दूसरा लेता है। ऐसे वहाँ भी फैमिली सिस्टम होगा। दुकानदार और ग्राहक का भाव नहीं होगा। मालिकपन का ही भाव होगा। सिर्फ आपस में एक्सचेन्ज करेंगे। कुछ देंगे, कुछ लेंगे, कमी तो किसी को भी नहीं होगी। प्रजा को भी कमी नहीं होगी। प्रजा भी अपने शरीर निर्वाह से पद्मगुणा भरपूर होगी। इसलिए मैं ग्राहक हूँ, यह मालिक है- यह भाव नहीं रहेगा। स्नेह की लेन-देन होगी। हिसाब-किताब की खींच-तान नहीं होगी। रजिस्टर नहीं होंगे।

रतन जड़ित के साज़ होंगे। नैचुरल साज होंगे। मेहनत वाले नहीं होंगे। अंगुली रखी और बजा। ड्रेस तो बहुत अच्छी पहनेंगे। जैसा कार्य होगा वैसी ड्रेस होगी। जैसा स्थान वैसी ड्रेस। भिन्न-भिन्न ड्रेस पहनेंगे। श्रृंगार भी बहुत प्रकार के होंगे। भिन्न-भिन्न प्रकार के ताज होंगे, गहने होंगे। लेकिन बोझ वाले नहीं होंगे। रूई से भी हल्के होंगे। रीयल गोल्ड होगा और उसमें हीरे ऐसे होंगे जो भिन्न-भिन्न रंग की लाइट्स हर हीरे से नज़र आयेगी। एक हीरे से ७ रंग दिखाई देंगे। यहाँ भिन्न-भिन्न रंग की ट्यूब्स लगाते हो ना। वहाँ हीरे ही भिन्न-भिन्न रंग के ट्यूब्स मुआफिक चमकेंगे। हरेक का महल रंग-बिरंगी लाइट से सजा हुआ होगा। जैसे यहाँ अनेक आइने रखकर एक चीज़ अनेक रूप में दिखाते हो ऐसे वहाँ की जवाहरात ऐसी होगी जो ऊपर की सीन एक के बजाए अनेक रूप में दिखाई देगी। सोने की लाइट और हीरों की लाइट अर्थात् चमक दोनों के मेल से महल जगमगाता हुआ नज़र आयेगा। सूर्य की किरणों से हीरे और सोना ऐसे चमकेंगे जैसे हज़ारों लाइट्स जल रही हैं। इतनी तारों (वायर्स) आदि की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। बहुत सुन्दर प्रकार के आजकल की राजाई फैमली में बिजलियों की जगमग देखते हो, भिन्न-भिन्न प्रकार की लैम्पस की डिज़ाइन देखते हो। वहाँ रीयल हीरों के होने के कारण एक दीपक अनेक दीपकों का कार्य करेगा। Useज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सब नैचुरल होगा।

भाषा तो बहुत शुद्ध हिन्दी ही होगी। हर शब्द वस्तु को सिद्ध करेगा - ऐसी भाषा होगी। (विदेशियों को) आपकी इंगलैण्ड और अमेरिका कहाँ जायेंगे? वहाँ महल नहीं बनाना। महल तो भारत में बनाना। वहाँ सिर्फ घूमने के लिए जाना। वह पिकनिक के स्थान, घूमने के स्थान होंगे। वह भी थोड़े-बहुत होंगे, सभी नहीं।

विमान शुरू किया और आवाज़ से भी पहले पहुँच जायेंगे। इतनी तेज़ स्पीड विमान की होगी। जैसे फोन में बात करते हो ना, इतना जल्दी विमान से पहुँच जायेंगे। इसलिए फोन करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। विमान भी फैमिली के भी होंगे और एक-एक के भी होंगे। जिस समय जो चाहिए वह यूज़ करो। अब बैठ गये विमान में! अभी सतयुगी विमान छोड़कर बुद्धि के विमान में आ जाओ। बुद्धि का विमान भी ऐसी स्पीड वाला

है? संकल्प की स्पीड का है? संकल्प किया और चाँद और सितारों से भी परे अपने घर पहुँच गये। ऐसे बुद्धि का कियान सदा एवररेडी है? सदा विघ्नों से परे है? जो किसी भी प्रकार का एक्सीडेण्ट न हो। जाना चाहें परमधाम में और धरती को ही छोड़ न सकें या और कोई पहाड़ी से टकराकर गिर जाए। व्यर्थ संकल्प भी एक पहाड़ी से टकराना है। तो एक्सीडेंट से परे एवररेडी बुद्धि का विमान है? पहले इस विमान पर चढ़ेंगे तब वह विमान मिलेगा। ऐसे एवररेडी हो? जैसे स्वर्ग की बातों में हाँ-हाँ करते रहे वैसे इन बातों में हाँ-हाँ नहीं करते हो।

आज वतन में स्वर्ग का नक्शा निकाला था, इसलिए आप लोगों को भी सुनाया। ब्रह्मा बाप तैयारी कर रहे हैं ना स्वर्ग में जाने की तो स्वर्ग के नक्शे निकाल रहे हैं। आप सब तैयार हो ना? तैयारी कौन-सी है वह तो मालूम है ना? कौन बाप के साथ स्वर्ग के गेट से पास करेंगे। उसकी पास ले ली है? गेट-पास तो ले ली है लेकिन बाप के साथ गेट पास करने की पास हो। एक वी.आई.पी.गेट पास होती है और एक राष्ट्रपति की भी पास होती है। यह विश्वपति का गेट पास है। कौन-सी गेट-पास ली है? अपने पास को चेक करना।

ऐसे वर्तमान साहबजादे सो शहज़ादे, प्रकृति के मालिक सो विश्व के मालिक, मायाजीत सो जगतजीत, एक संकल्प की विधि द्वारा सिद्धि को प्राप्त करने वाले, ऐसे संर्व सिद्धि स्वरूप, सदा पास रहने वाले और पास हो साथ में पास करने वाले, ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को बाप-दादा का याद, प्यार और नमस्ते।

यह कोई समाप्ति नहीं, यह तो पतित से पावन, भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी, नारी से लक्ष्मी और नर से नारायण बनने की एक रूहानी (आध्यात्मिक) यात्रा की शुरुआत है। हमारे तरफ से आपके लिए बहुत बहुत शुभ भावना और शुभकामनाएं रखते हैं।

*****